प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक-3

भाग-1

(इस पाठ्य पुस्तक में प्रवेशिका परीक्षा प्रश्न-पत्र-3, भाग-1 की सामग्रियाँ उपलब्ध है। प्रचारक एवं विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि प्रवेशिका प्रश्न-पत्र-3, भाग-2 में प्रादेशिक भाषा में प्रश्न पूछे जाएँगे। अतः वे अपनी-अपनी प्रादेशिक भाषा के लिए निर्धारित पुस्तकों का अध्ययन कर लें।)

प्रकाशक

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

त्यागरायनगर, चेन्नै-600 017

प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक-3 – भाग-1

विषय सूची

		पृष्ठ
I. निबंध		
1. नागरिकों के कर्तव्य और अधिकार	.....	5
2. जीवन में व्यायाम और खेलकूद का योगदान	.....	6
3. भारत की संपर्क भाषा हिन्दी	.....	7
4. भारतीय किसान	.....	9
5. सूचना प्रौद्योगिकी और भारत	.....	10
6. भारतीय समाज पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव	.....	12
7. बेकारी (बेरोज़गारी) की समस्या	.....	13
8. दैव-दैव आलसी पुकारा	.....	15
9. दीपावली	.....	16
10. पोंगल – मकर संक्रांति	.....	18
11. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	.....	20
12. महात्मा गाँधी	.....	21
II. पत्र-लेखन	.....	24
III. प्रयोजनमूलक हिन्दी	.....	29
IV. संक्षिप्तीकरण	.....	35
V. अनुवाद अभ्यास	.....	41
अनुवाद अभ्यास – उत्तर	.....	67
नमूना प्रश्न-पत्र	.....	94

I. निबन्ध

1. नागरिकों के कर्तव्य और अधिकार

भूमिका :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे नियमबद्ध समाज में रहना पड़ता है जो बाद में एक राष्ट्र के रूप में परिणत हो जाता है। एक अच्छा राष्ट्र उसे शान्ति, समृद्धि, अधिकार, सुरक्षा, विद्या, नौकरी और विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देता है। ये सब उनके विकास में योगदान देते हैं।

भारतीय संविधान :

भारत के संविधान में प्रजा को अनेक अधिकार प्रदान किये गये हैं। पर ये अधिकार अबाध नहीं हैं। अधिकार में ही कर्तव्य समाविष्ट है। दोनों–कर्तव्य और अधिकार–अन्योन्याश्रित हैं; एक दूसरे के पूरक हैं। अरस्तू के अनुसार नागरिक की पहली योग्यता उसके शासन करने की क्षमता और क्रमशः शासित होने में है।

सच्चा नागरिक वह है जिसमें बुद्धि हो, आत्मनियंत्रण हो और सच्ची चेतना हो। अपने कर्तव्यों का प्रयोग करने के लिए नागरिक को इन गुणों से भरा पूरा होना ज़रूरी है। स्वार्थता और दलबंदी सच्चे नागरिक बनने में बाधा पहुँचाते हैं। यदि एक नागरिक दुर्गुणों को अपनावे तो वह अपने राष्ट्र के प्रति कर्तव्यपरायण नहीं रह सकता।

नागरिकों का कर्तव्य :

प्रत्येक नागरिक को अपने राष्ट्र के प्रति वफ़ादार और विनम्र रहना ज़रूरी है। नागरिक का प्रथम कर्तव्य राष्ट्र के संविधान या कानून को मानना है और जहाँ कानून के खिलाफ़ कोई कार्य हो तो उसे रोकना भी है। शान्ति को कायम रखने में, उसे राज्य की मदद करनी है।

बाहर से देश पर आक्रमण हो तो समय की आवश्यकता को ख्याल में रखकर उसे अपना सब कुछ त्याग करना है।

संविधान की 42वीं धारा के संशोधन के रूप में नागरिकों के दस कर्तव्यों को यों घोषित किया गया है और उन्हें मूल कर्तव्य भी ठहराया गया है। वे हैं :–

1. संस्थाओं का मान रखना है, वैसे ही राष्ट्रीय झंडे और राष्ट्र गीत का भी मान रखना है।
2. स्वातंत्र्य-संग्राम के उच्च आदर्शों को हृदय में पाले रखना है।
3. भारत राष्ट्र की प्रभुता, एकता और अखण्डता का समर्थन करना है।

4. राष्ट्र की रक्षा करना और ज़रूरत पड़े तो राष्ट्रीय सेवा करना है।
5. आम भाईचारे की भावना को देश में प्रोत्साहन देना है।
6. राष्ट्र की सामासिक संस्कृति की परंपरा का परिरक्षण करना है।
7. राष्ट्रीय वातावरण की रक्षा करना है।
8. वैज्ञानिक प्रकृति का विकास करना है।
9. सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा करना और हिंसा का पूर्ण त्याग करना है।
10. सब वैयक्तिक तथा समवेत कार्यकलापों में उत्तमता लाने का प्रयत्न करना है।

उपसंहार :

भारत की सामाजिक और राजनैतिक संस्थाओं की बनावट (ढाँचा) सही तौर पर समझने से हम क्रियाशील और बुद्धिमान नागरिक बन सकते हैं। हमारा समाज विकासशील है जिसमें समाजिक और आर्थिक परिवर्तन बड़े ज़ोर से हो रहे हैं। इन कर्तव्यों के अनुपालन से हम भारत माता का सच्चा अनुग्रह पाकर नागरिक बन सकते हैं।

❊ ❊ ❊ ❊

2. जीवन में व्यायाम और खेलकूद का योगदान

परिचय :

खेलकूद, व्यायाम, कसरत ये सब शरीर को स्वस्थ और जवान रखने के लिए आवश्यक हैं। शरीर के हर भाग को इनके द्वारा चुस्तता और शक्ति मिलती है और रक्त संचार नियमित रहता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास हो सकता है। मन स्वस्थ हो तो इनसान का चरित्र भी अच्छा रहेगा। मन और शरीर का स्वास्थ्य ही अच्छे चरित्र या चरित्र गठन की नींव है।

खेलकूद और व्यायाम :

हमारे देश में तरह-तरह के खेल, खेले जाते हैं। हरेक व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न प्रकार के खेल खेलता है। शारीरिक खेल, दिमागी खेल, योगाभ्यास, एकान्त में खेले जानेवाले खेल, सामूहिक रूप से खेले जानेवाले खेल आदि अनेक प्रकार के खेल हैं।

शारीरिक लाभ :

खेलकूद रक्त संचार को चुस्त बनाता है। कसरत करना, दौडना, कूदना, तैरना, उठना, बैठना, साँस लेने के अभ्यास आदि क्रियाओं द्वारा हमारी माँसपेशियाँ, हड्डियाँ और पसलियों को शक्ति मिलती है। हमारा

शरीर चुस्त रहेगा और शरीर स्वस्थ हो तो काम करने में मजा भी आयेगा। तेज़ सांस लेने से या हँसने से फेफडों और दिल पर अच्छा असर पड़ता है, रक्त संचार सुधर जाता है।

खेलकूद द्वारा चरित्र संगठन :

नियमित तौर से व्यायाम करना या खेलना एक अच्छी आदत है। जीवन के लिए अनुशासन अति आवश्यक है। इससे हम जिम्मेदार, समय के पाबंद और सदुपयोग करनेवाले बन जाएँगे। हमारा स्वभाव भी शान्त और उत्साह भरा हो जाएगा।

शतरंज जैसे दिमागी खेल खेलेंगे तो दिमाग चुस्त होगा और हमें सोच समझकर निश्चय पर पहुँचने की आदत मिलेगी। मामले को भिन्न पहलुओं से परखने की क्षमता हममें आएगी। हर समस्या को मुसीबत न समझकर चुनौती के समान देखकर उसे सुलझाने की कौशलता मिलेगी।

सामूहिक रूप में खेलें तो हमें समूह भावना समझ में आएगी। स्वार्थ भावना से मुक्त होकर टीम का हिस्सा बनकर टीम और देश के लिए पूरा दिल लगाकर हम खेलेंगे। यह तो देशभक्ति का पहलू ही तो है।

खेलकूद में हार और जीत दोनों हैं। अच्छा खिलाडी दोनों को समानता से देखेगा। शान से हारना या दूसरों की जीत की खुलकर प्रशंसा करना महान चरित्र का परिचायक है। स्पोर्टस्मैनशिप (खेल भावना) तो यही है।

योगाभ्यास से शरीर, मन और आत्मा तीनों में संतुलन प्राप्त किया जाता है। आदमी अपने आप पर नियंत्रण रखना सीख सकता है और आत्मसंयमी बन सकता है। आत्मसंयम तो सफ़लता की चाबी है।

उपसंहार :

संक्षिप्त रूप में खेलकूद और व्यायाम चरित्र गठन के साधन है। खेलकूद द्वारा प्राप्त खूबियों के द्वारा आदमी लोकप्रिय, उदार, सबका शुभचिंतक बन जाता है।

❊ ❊ ❊ ❊

3. भारत की संपर्क भाषा हिन्दी

बहुभाषा भारत :

भारत एक अनुपम देश है। 'अनेकता में एकता'–यही भारत की विशेष पहचान है। भारत में बोली जानेवाली विभिन्न भाषाएँ इस विविधता का एक मुख्य कारण हैं। संसार के किसी अन्य देश में इतनी सारी भाषाएँ पायी नहीं जातीं। हर भारतीय भाषा की अपनी महक, अपनी सुन्दरता और विशिष्टता होती है। इनमें कुछ भाषाएँ मौखिक रूप में हैं और कई भाषाओं की अलग-अलग लिपियाँ हैं। कुछ भाषाएँ एक ही लिपि का प्रयोग करती हैं। अधिकतर भारतीय भाषाओं की लिपि 'देवनागरि' है।

संप्रेषण की समस्याएँः

कई भाषाएँ भारत के सौंदर्य में चार चाँद लगाती हैं। लेकिन अनेक भाषाओं के कारण कई चुनौतियाँ भी हैं। हर प्रांत के लिए अलग भाषा है। गाँव और शहरों में भिन्न-भिन्न बोलियाँ हैं। इससे एक जगह के लोग दूसरी जगह के लोगों की बात को समझ नहीं पाते हैं। वे आपस में किस भाषा में संपर्क करें? संचार का माध्यम क्या हो? इस कारण हर प्रांत का अपने में ही सिकुड़ जाने की नौबत होती है। इससे देश की उन्नति हो नहीं सकती। देश के ही अंदर (राष्ट्रीय) मैत्री की भावना नहीं पनपती। एक प्रांत का आदमी अगर दूसरे प्रांत में जाए और वहाँ की भाषा से वह अनजान है तो वह अपने को अजनबी और अकेला महसूस करेगा।

संपर्क भाषा की आवश्यकताः

भाषा की विविधता के कारण उत्पन्न होनेवाली समस्याओं का समाधान तभी होगा, जब पूरे देश के लिए एक संपर्क भाषा हो। इससे सारे देश में एक ही भाषा संपर्क भाषा के रूप में उभरेगी जिसके कारण देश के किसी भी कोने में, कोई भी अपने को अलग या अज़नबी नहीं महसूस करेगा। यह भाषा संपर्क के लिए, मित्रता बढ़ाने के लिए, संचार के लिए सुविधाजनक होगी। इससे प्रादेशिक संकीर्णता मिट जाएगी। हिन्दी ऐसी एक संपर्क भाषा है।

राजभाषा हिन्दीः

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं की सूची है, ये भाषाएँ भारत की राष्ट्रभाषाएँ हैं। इनमें देवनागरी में लिखित 'हिन्दी' को राजभाषा के रूप में घोषित किया है। बहुत विचार और विवाद के बाद भारत के नेताओं ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में चयन किया। भारत की लगभग सभी जगहों में हिन्दी परिचित भाषा है। पूरे उत्तर भारत में हिन्दी ही ज़्यादा बोली जाती है। पूरब, पश्चिम और दक्षिण में भी लोग हिन्दी बोलने और सीखने में रुचि लेते हैं और उसकी जानकारी रखते हैं। हिन्दी हमारी आदि भाषा संस्कृत से जन्मी है।

आजकल हिन्दी सरकारी कार्यों में भी पूरी तरह प्रयुक्त होती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर या सरकारी फार्मों में अंग्रेज़ी और हिन्दी का साथ-साथ प्रयोग होता है।

हर प्रांत की शिक्षा प्रणाली मे अंग्रेज़ी, प्रान्तीय भाषा और हिन्दी की शिक्षा दी जाती है। इसे त्रिभाषा नीति कहते हैं। भारत के अधिकतर प्रांतों ने त्रिभाषा नीति अपनायी है। दक्षिण भारत की अधिकतर पाठशालाओं में तीन भाषाएँ पढ़ायी जाती हैं। कुछ स्कूलों में छात्र-छात्राओं को हिन्दी या प्रांतीय भाषा पढ़ने का विकल्प दिया जाता है। हिन्दी गाने, हिन्दी फिल्में आदि अत्यंत लोकप्रिय है।

हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता और सम्मान :

हर देश का नागरिक अपनी राष्ट्रभाषा पर गर्व करता है। अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों और सभाओं में उस देश के नेता अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं। आवश्यकतानुसार अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं में भाषण का अनुवाद किया जाता है। आजकल हमारे भारतीय नेता भी विदेश जाते समय और अन्य देश को संबोधित करते वक्त हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं। इससे संसार में हिन्दी का सम्मान बढ़ रहा है।

उपसंहार :

हर प्रांत में हिन्दी प्रचार के लिए विभिन्न संस्थान स्थापित हैं जिससे हिन्दी का प्रशंसनीय प्रचार हो रहा है। इसका बहुत समृद्ध साहित्य है।

हिन्दी उन्नति के रास्ते पर लगातार चल रही है। आजकल इसे सजाने में कई लेखक, पत्रकार, कवि, गायक लगे हुए हैं।

❊ ❊ ❊ ❊

4. भारतीय किसान

प्रस्तावना :

भगवान विष्णु यदि सृष्टि के पालक हैं तो मानव समाज का पालक किसान है। दुख उसके जीवन का साथी है, तपस्या उसके जीवन का उद्देश्य है। परोपकार उसके जीवन का लक्ष्य है तथा परिश्रम उसके जीवन का अंग है। वह साहस की मूर्ति है, त्याग और संतोष उसके गुण हैं। भारतीय किसान सच्चे अर्थों में भगवान का प्रतिनिधि है।

किसान की दशा :

भारत गाँवों का देश है। यहाँ लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। हमारे अति प्राचीन ग्रंथ वेदों में यत्र-तत्र कृषी का वर्णन किया गया है। अन्नोत्पादन करके लोगों का पोषण करनेवाले कृषक ईश्वर से कम नहीं है। परंतु उसकी दयनीय स्थिति का अवलोकन करके हर सहृदय की आत्मा काँप उठती है। कपड़ों के नाम पर शरीर पर केवल फटी लंगोटी एवं फटे-पुराने वस्त्र, भोजन के नाम पर रूखी-सूखी रोटी एवं घर नाम पर सदियों पुरानी टूटी-फूटी झोंपड़ी–यही भारतीय किसान की स्थिति है। वह अथक परिश्रम करता है तथा खून-पसीना एक करके खेत में काम करता है। कभी भी अपने कर्तव्य से मुँह नहीं मोडता है। फिर भी भारतीय किसान की अवस्था अत्यंत ही दयनीय है। कठिन परिश्रम करने के उपरांत भी उसे भरपेट भोजन और शरीर की रक्षा के लिए पर्याप्त वस्त्र नहीं मिलते। वह बराबर कर्जदार बनकर रहता है।

भारतीय किसान के सम्मुख कई समस्याएँ खड़ी रहती हैं जिनमें पानी की समस्या प्रमुख है। जिस वर्ष वर्षा ठीक समय पर नहीं होती, किसानों को बडी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी अतिवृष्टि के कारण भी फसलें नष्ट हो जाती हैं।

स्थिति में सुधार के प्रयत्न

सरकार की योजनाओं को सफल बनाने के लिए कृषि और कृषक दोनों की अवस्थाओं में सुधार लाना परमावश्यक है। किसान को खेती के नवीनतम साधनों की जानकारी देनी चाहिए। नव वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग करके भारतीय किसान अधिक अन्न उपजाने में समर्थ होगा। किसान अपने खाली समय में अनेक कार्य, जैसे - टोकरी बुनना, रस्सी बनाना आदि कर सकते हैं जिससे उनकी आर्थिक अवस्था में पर्याप्त सुधार हो सकता है।

उपसंहार :

देश का भला किसानों की भलाई पर ही निहित है। हमें प्रतिदिन खाना खाने से पूर्व, उस खाने का उत्पाद करनेवाले किसान की याद करनी है। बचपन से ही कृषि और खेती संबंधी बातों से बच्चों को अवगत करना चाहिए। इससे किसान की परेशानियों को सब लोग समझेंगे और उपयुक्त मंच में उनका प्रतिनिधित्व करेंगे।

❉ ❉ ❉ ❉

5. सूचना प्रौद्यौगिकी और भारत

परिचयः

इस शताब्दी में एक नयी लहर उठी है, एक नये युग का प्रारंभ हुआ। यह है आइ.टी. यानी सूचना प्रौद्योगिकी का युग। यह एक बड़ा उद्योग बन गया है। चारों ओर इसी का बोलबाला है। दुनिया भर करोड़ों लोग इसी उद्योग में लगे हैं। विशेष रूप से महानगरों में यह उद्योग दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रही है। सब युवा लोगों के लिए आई.टी. उद्योग ही सबसे आकर्षक बन गया है और वहाँ नौकरी प्राप्त करना उनका जीवन लक्ष्य बन गया है।

आइ.टी. का अर्थः

आई.टी यानी इन्फरमेशन टेक्नॉलजी (Information Technology) यानी सूचना प्रौद्योगिकी आज की संचार क्रांति और कंप्यूटर के चमत्कार का नतीजा है। इसके द्वारा बहुत सारे काम बड़ी तेजी से, दुरुस्ती से संपन्न होते हैं। समय और स्थानों की दूरी मिट गयी है। कंप्यूटर द्वारा हम संसार के किसी भी कोने से खबर प्राप्त कर सकते हैं; साथ-साथ कई काम इसी के द्वारा पूरा कर सकते हैं। अपने स्थान में बैठे-बैठे

कंप्यूटर के सहारे सब कुछ कर सकते हैं। सैकड़ों अन्य उद्योग इस पर निर्भर होने लगे हैं। कंप्यूटर एक हरफ़न मौला बन गया है।

युवा पीढ़ी में लोकप्रियता :

सूचना प्रौद्योगिकी सालों से युवाओं के बीच अति लोकप्रिय और उपयोगी विषय बन गया है। कंप्यूटर आधारित शिक्षा प्राप्त करने से बड़े-बड़े उद्योग संस्थाओं में अच्छी नौकरी मिलती है। यहाँ पर्याप्त वेतन भी मिलता है। आज़ की युवा पीढ़ी जल्दी धन संचय करना चाहती है। अतः आइ.टी. उद्योग ही उन्हें अधिक भाता है।

आइ.टी. उद्योग का सकारात्मक पक्ष :

इस उद्योग ने भारत को दुनिया में अलग पहचान प्रदान की है। इस उद्योग में भारतीयों की संख्या सबसे अधिक है। इससे भारत को विदेशी मुद्रा पर्याप्त रूप में प्राप्त होती है। इस उद्‌योग ने वैश्वीकरण के दरवाजे खोल दिए हैं और साथ-साथ बेकारी की समस्या का काफी हद तक हल कर दिया है।

इसमें पर्याप्त आमदनी मिलने के कारण बाजार में मौजूद हर तरह की चीज़ खरीद सकते हैं। जल्दी घर खरीद सकते हैं, मोटर गाड़ी खरीद सकते हैं, जीने का स्तर बढ़ा सकते हैं। साथ-साथ बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा और प्रशिक्षिण दिलवा सकते हैं।

आइ.टी. उद्योग का नकारात्मक पहलू :

इस उद्योग में काम करने से पैसा जरूर मिलता है। पर इसके लिए भारी कीमत चुकानी पड़ती है। रात दिन काम करना पड़ता है। दफ़्तर में लम्बे समय तक रहना पड़ता है। इसलिए परिवार पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया जा सकता। बच्चों को अनेक चीज़ें उपलब्ध करा सकते हैं पर वक्त नहीं दे सकते। उनकी बातों को प्रेम से सुनने को किसी माँ बाप के पास न फुरसत है न ताकत। वे तो थके-थके रहते हैं।

विदेशी रीति रिवाज़ों पर आधारित होने के कारण इन कंपनियों के काम करने के तौर-तरीके भिन्न है। इनके कोई निर्धारित समय नहीं होते। अक़सर रात को काम करके दिन में बेकार रहना पड़ता है। साथ-साथ घंटों एक ही जगह में कंप्यूटर के पर्दे पर आँखें गढे वातानुकूलित कमरे में बैठे रहना पड़ता है।

इस काम के दबाव के कारण घर में खाना पकाना मुश्किल हो जाता है। होटलों में जाकर खाना या फास्ट फुड़ खाना पड़ता है। ये चीज़ें चाहे स्वादिष्ट होती है, परंतु इनका स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। कई बीमारियाँ आती हैं।

लंबे अर्से तक बंद कमरे में वातानुकूलित वातावरण में एक ही जगह बैठकर कंप्यूटर की रोशनी को देखते रहने से कई तरह की परेशानियाँ हो रही है। आँखों की खराबी, सांस की बीमारियाँ, पीठ व गले में दर्द, दबाव, ब्लड प्रेशर, (रक्त छाप) आदि के शिकार होते है।

ऐसे लोगों को सामाजिक कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए न फुरसत रहती है न शक्ति रहती। रिश्ते तथा कई शादियाँ टूट जाती हैं।

रात भर काम करने में कई खतरे भी हैं। लड़कियों के लिए भी अनेक परेशानियाँ हैं।

समस्याओं का समाधान :

संस्थाओं के व्यवस्थापक इन कर्मचारियों के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए इन्हें योगाभ्यस और ध्यान के कार्यक्रमों में भेजते हैं। कई खेल आयोजित किए जाते हैं। परिवार दिवस, सैर आदि का प्रबंध करके मेल-जोल बढ़ाते हैं और तनाव को कम करने की कोशिश करते हैं। कर्मचारियों की सुरक्षा का भी प्रबंध किया जा रहा है।

उपसंहार :

सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग आज का आकर्षण है। इस उद्योग में कई खूबियाँ हैं और कमियाँ भी हैं। लेकिन हमें विश्वास है कि इनमें धीरे-धीरे संतुलन स्थापित होगा।

❊ ❊ ❊ ❊

6. भारतीय समाज पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

प्रस्तावना :

प्राचीनकाल से ही भारत में विश्वास भावना, आस्था, धर्म, रीतिरिवाज़ एवं परंपराओं को अत्यधिक महत्व देते आ रहे हैं। भारत की संस्कृति आध्यात्म प्रधान संस्कृति हैं।

पाश्चात्य संस्कृति भौतिक प्रधान है अर्थात्, वहाँ बाहरी साधना का महत्व अधिक है। लेकिन आज की पीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता की ओर आकृष्ट है।

आधुनीकीकरण एवं पाश्चात्यीकरण :

आजकल की युवा पीढ़ी आधुनिकीकरण एवं पाश्चात्यीकरण दोनों को एक दूसरे का पर्याय समझते है–यह गलत है। आधुनिकीकरण का अर्थ हैं, परंपराओं से चलती आनेवाली व्यवस्थाओं में आधुनिक अपेक्षाओं के अनुसार परिवर्तन एवं परिवर्धन करना। उदाहरण के लिए–तेल से जलनेवाले दीपक के स्थान में, आवश्यकता के अनुसार बिजली दीपक का प्रयोग करना।

पाश्चात्यीकरण का अर्थ है, पाश्चात्य देशों में, उनके भौगोलिक तथा अन्य कारणों के आधार पर जो परंपराएँ चलती हैं, उनका बिना किसी सोच-विचार के, अपनाना और अनुसरण करना। उदाहरण के लिए पश्चात्य देशों में ठंड अधिक होने के कारण मोटे-मोटे सूट-टाई आदि पहनते हैं। हमारे देश में गरमी अधिक है। यहाँ सूती कपड़े ही उपयुक्त है। लेकिन पाश्चात्य प्रभाव के कारण यहां के लोग सूट-टाई पहनते हैं।

अर्थात् परंपराओं से चल रहे मूल्यों को आत्मसात करते हुए आधुनिक मूल्यों का अनुकरण करना आधुनिकीकरण है। आँखें मूंदकर पाश्चात्य देशों की संस्कृति का अनुकरण करना आधुनिकीकरण नहीं है।

पाश्चात्य संस्कृति का अवाँछित परिणाम :

पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन हो रहा है। विवाह में रहनेवाली श्रद्धा कम होती जा रही है। 'स्त्री-पुरुष समानता का अर्थ गलत रूप में प्रयोग किया जा रहा है। इससे परिवार में अशांति फैलती है।

अधिकांश लोग अब भाग्य की अपेक्षा कर्म पर विश्वास करने लगे हैं। आधुनिकता आज समय की मांग है। लेकिन इसीके साथ-साथ पाश्चात्य भौतिकावादी दृष्टिकोण ने लोगों को यांत्रिक बना दिया है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण लोगों के बीच आत्मीयता एवं स्नेहपूर्ण संबंध समाप्त होते जा रहे हैं।

पाश्चात्य संस्कृति का सकारात्मक पक्ष :

हमें यह नहीं सोचना है कि पाश्चात्य सभ्यता संपूर्ण रूप में अवाँछित हैं। लेकिन, उसमें भी कुछ सकारात्मक बात है। हमें भारतीय संस्कृति की परंपराओं को सहेजकर रखने के साथ-साथ पाश्चात्य संस्कृति के आधुनिक एवं उपयुक्त मूल्यों को आत्मसात करने की आवश्यकता है। यह तभी संभव है जब मनुष्य की बौद्धिकता के साथ-साथ रागात्मकता का विकास हो।

उपसंहार :

'कामायनी' के रचयिता जयशंकर प्रसाद ने श्रद्धा ओर इडा के समन्वय पर बल दिया है। श्रद्धा भारतीयता को सूचित करती है, तो 'इड़ा' पाश्चात्यता को। मानवता की रक्षा और उसके विकास के लिए पूरब और पश्चिम का संतुलित मिलन आवश्यक है।

❁ ❁ ❁ ❁

7. बेकारी (बेरोज़गारी) की समस्या

प्रस्तावना :

हर जीवनराशी जीवनयापन के लिए प्रयत्नशील है। चींटी से लेकर हाथी तक सभी पशु और पक्षी अपने जीवन की रक्षा के लिए आहार की खोज में लगे रहते हैं। पक्षी सूर्योदय के साथ ही आहार की खोज में जाकर अपना आहार पा लेते हैं। जानवर भी सूर्योदय से लेकर संध्याकाल तक अपने आहार निमित्त प्रयत्नरत है। मनुष्य अपना आहार धन देकर प्राप्त करता है और धन कमाने के लिए नौकरी या कोई काम करता है। युवा अवस्था के बाद हर एक मनुष्य नौकरी की तलाश में रहता है। यदि उसे नौकरी नहीं मिली तो वह निराश और हताश हो जाता है। संस्कृत कहावत है कि – 'उद्योगिनं पुरुष सिंह उपैति लक्ष्मीः दैवेन देयं

इति का पुरुषाः वदन्ति।' अर्थात् परिश्रमी पुरुष संपत्ति अर्जित करता है। लेकिन कायर भाग्य के भरोसे बेकार रहता है। अतः यह निष्कर्ष है कि मनुष्य को परिश्रमी होना है।

समस्या का कारण :

अब हम देखें कि बेकारी की यह समस्या क्यों उठती है। पढ़ाई पूरी करने के बाद अधिकतर लोग नौकरी की ही खोज में रहते हैं। प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में छात्र-छात्राएँ स्कूल या कालेज की परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते हैं। प्रतिवर्ष उतनी संख्या में नौकरियाँ मिलना असंभव है। अतः प्रतिवर्ष नौकरी न पानेवालों की संख्या बढ़ती जाती है। साल प्रति-साल नौकरी न पानेवाले लोगों की संख्या में वृद्धि ही होती रहती है। आज बेकारी और बोरोज़गारी एक समस्या के रूप में उठ खडी हुई है।

भारत में बेकारी के कई कारण हैं। भारतीय युवा पीढ़ी परिश्रम के महत्व को भूल गयी है और सफेद पोश नौकरी के पीछे पागल बनी है। अतएव अध्ययन पूरा करने के बाद सबके सब सरकारी या सार्वजनिक कार्यालयों में नौकरी पाने की खोज में जाते हैं। सब के लिए मन पसंद की नौकरी मुहैया नहीं कर सकते। तो इस समस्या का समाधान कैसे करें?

समस्या के समाधान में सरकार का योगदान :

इस समस्या के समाधान के लिए सरकार कई प्रकार से प्रयत्न कर रही है। रोज़गार नियोजन कार्यालय (एम्प्लायमेंट एक्सचेंज) द्वारा बेरोज़गार लोगों को रोज़गारी दिलाने का प्रयत्न कर रही है। बैंक, बीमा कंपनियाँ, केन्द्र सरकार संगठन आदि प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम अनेक योग्य युवाओं को नौकरी प्रदान करते हैं। अनेक निजी कंपनियाँ भी इसमें योगदान दे रही हैं। परंतु यह समस्या इतनी विकट होती जा रही है कि इसका समाधान चुनौती भरा है।

समस्या समाधान के लिए सुझाव :

हमें दस्तकारी और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करना है जिससे कारीगरों को उपयोगी रूप में नियुक्त किया जा सकता है। इन कारीगरों को सही प्रशिक्षण दिया जाना है ताकि वे अपने पैतृक व्यवसाय आसानी से चला सके। तमिल में एक कहावत है–"हस्तकला सीखें" (कैत्तोलिल पलगु) विद्यार्थियों को किसी न किसी हस्तकला में निपुणता हासिल करनी है। सिलाई, नक्काशी, शिल्प कला– जैसे अनेक कलाएँ हैं। इनमें हुनर प्राप्त करें तो हमें किसी नौकरी की तलाश में जाने की आवश्यकता नहीं रहेगी। आत्म निर्भर रह सकते हैं। जापान के घर घर में एक छोटा सा कारखाना रहता है। उद्यमी व्यक्ति के लिए सैकड़ों काम उपलब्ध है।

सरकार को लघु उद्योगों और कुटीर उद्योगों को बढावा देना है। जो लघु उद्योगों और कुटीर उद्योगों में उत्पन्न होता है वह कल-कारखानों में उत्पन्न न किया जाये। ग्रामों का विकास भी साथ-साथ करना है।

खेतीबाडी का विकास ऐसा करना है कि गाँव में कोई बेरोजगार न रहे। किसान लोगों को खेतीबाड़ी के अलावा मवेशी पालन, मुर्गी पालन आदि अनेक मार्ग अपनाना है।

शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन किया जाना है, रोज़गारी अवसर प्रदान करनेवाली क्षमताओं को बढ़ाने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन की आवश्यकता है। कलकारखाने और लघु उद्योगों या कुटीर उद्योगों में होड़ न रहें पर एक दूसरे की पूरक बनें।

उपसंहार :

बेकारी भारत की ही समस्या नहीं, वह एक विश्व समस्या है। भारत विशाल देश है और उसकी जनसंख्या भी अधिक है। अतः यह समस्या यहाँ भंयकर रूप में दिखाई पड़ती है। अगर युग पीढ़ी आत्मनिर्भर रहकर उद्यमी रहें तो यह समस्या अपने आप सुलझ जाएगी।

❊ ❊ ❊ ❊

8. दैव दैव आलसी पुकारा

प्रस्तावनाः

मानव या तो भाग्यवादी रहता है या पुरुषार्थी। भाग्यवादी मनुष्य भाग्य के सहारे जीता है। असफल होने पर भाग्य को कोसता है तथा सफलता मिल जाने पर स्वयं को भाग्यशाली मान बैठता है, जबकि पुरुषार्थी पुरुषार्थ पर भरोसा करता है। वह भाग्य की सत्ता को नकारकर परिश्रम को महत्व देता है। वह भाग्य को अपना दास बना लेता है। भाग्यवादी मनुष्य सभी कार्य भाग्य के भरोसे छोड़कर आलसी जीवन जीता है। रामचरित मानस के सुन्दर काण्ड में कहा गया है – "कायर मन कहूँ एक अधारा, दैव दैव आलसी पुकारा।" अर्थात् कायर एवं आलसी लोग अपने आलसीपन के लिए दैव एवं भाग्य का बहाना देते हैं।

पुरुषार्थ की उपयोगिता :

धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष जैसे तत्वों को मिलाकर पुरुषार्थ बनता है। भारतीय ऋषि-मुनियों ने भी इन्हें जीवन का लक्ष्य बताया है। इन चार तत्वों को जिसने प्राप्त कर लिया वह जीवन के सभी सुख प्राप्त करता है। ये तत्व परिश्रम तथा दृढ़ निश्चय द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं। ऐसे परिश्रमी व्यक्ति के कदम लक्ष्मी भी चूमती है। क्योंकि कहा गया है – **'उद्योगिनं पुरुष सिंह उपैति लक्ष्मीः'।**

पुरुषार्थी व्यक्ति घर, कार्यालय तथा सभी स्थानों में सम्मान पाता है, क्योंकि वह किसी पर आश्रित नहीं होता। अर्थात् पुरुषार्थी को उसके लक्ष्य में सफलता अवश्य मिलती है। पुरुषार्थ से ही मनुष्य का जीवन बाधारहित होता है। क्योंकि वह अपने रास्ते में आयी बाधा को अपने उच्च मनोबल तथा पुरुषार्थ के बल पर

पार कर जाता है। संसार का प्रत्येक सुख, समृध्दि, वैभव कर्मठ व्यक्ति के चरणों तले न्योछावर हो जाते हैं। हमारा इतिहास ऐसे महापुरुषों के उदाहरणों से भरा पड़ा है।

भाग्यवादी दृष्टिकोण :

आलसी व्यक्ति 'दैव' अर्थात् भाग्य को अपने रक्षा कवच के रूप में प्रयोग करते हैं। ऐसे लोगों का विचार होता है कि "होता वही है, जो किस्मत में लिखा होता है, इसलिए अधिक भाग-दौड़ करने से कोई लाभ नहीं है।" लेकिन पुरुषार्थ के साथ यदि भाग्य भी मिल जाता है तो आदमी सफलता की शिखर छूता है। केवल भाग्य के सहारे कुछ भी संभव नहीं है। भाग्यवादी मनुष्य अपने पक्ष में अनेक तर्क ढूँढ़ लेता है। पुरुषार्थी काम करने का मार्ग किसी भी तरह ढूँढ पाता है।

आलस्य बड़ा शत्रु :

मनुष्य का सबसे कटु शत्रु आलस्य ही है। यह मनुष्य की समस्त चेतनाएँ नष्ट कर देता है। आलस्य से भौतिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का पतन होता है। आलसी व्यक्ति अपने जीवन से निराश होकर गुमनामी तथा अभाव में जीता है। आलसी विद्यार्थी कभी परीक्षा में अच्छे अंक नहीं प्राप्त करता। आलसी व्यापारी अपना व्यापार आगे नहीं ले जाता। आलसी कर्मचारी अपने यजमान को प्रसन्न नहीं कर सकता। आलसीपन घर, परिवार, दफ़्तर, स्कूल, देश, विश्व सभी के लिए हानिकारक है।

उपसंहार :

आज तो हम विज्ञान के आविष्कारों का लाभ उठा रहे हैं। ये आविष्कार वैज्ञानिकों की लगन तथा पुरुषार्थ का ही परिणाम है। जब हम दूसरों के परिश्रम के फल का आनंद उठाते हैं, तब हमारे परिश्रम से समाज को कुछ प्रदान करने का कर्तव्य को भी याद रखना चाहिए।

❊ ❊ ❊ ❊

9. दीपावली

परिचय :

त्योहार एक विशेष दिन है जिसके पीछे कोई न कोई धार्मिक कारण रहता है। इस दिन लोगों के मन में एक अद्‌भुत उत्साह भर जाता है और खुशी का माहौल फैल जाता है। त्योहार खुशी मनाने का दिन होता है। इस दिन में लोग आपसी भेदभाव भूल जाते हैं। परिवार के सदस्य एक साथ मिलकर आपसी प्रेम बांटते हैं, बड़े छोटे को आशीर्वाद और भेंट देते हैं। हर धर्म के अपने-अपने विशेष त्योहार होते हैं।

दीपावली :

दीपावली या दीवाली – दीपों की आवली या दीपों की कतार – यानी दीपों का त्योहार। यह प्रकाश का त्योहार है। प्रकाश अंधकार को दूर करके उजाला या चेतना फैलाता है। यह अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है। भारत के लगभग सभी धर्मवाले दीपावली का आनंद मनाते हैं।

दीपावली मनाने का कारण :

दीपावली त्योहार मनाने के संबंध में दो कहानियाँ प्रचलित हैं। श्रीकृष्ण और सत्यभामा ने नरकासुर नामक असुर का वध करके सबकी रक्षा की। उस दिन की याद में लोगों ने दीप जलाकर अपनी खुशी प्रकट करते हैं। दीप जलाकर अज्ञान पर ज्ञान की जीत, बुराई पर अच्छाई की जीत प्रदर्शित किया जाता है। यह भी कहा जता है कि जब श्रीराम रावण का वध करके, अपने वनवास को समाप्त कर सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या वापस आए तो लोगों ने अपने घरों में दीप जलाकर उनका स्वागत खुशी-खुशी किया। जो भी हो, दीपावली प्रकाश का त्योहार है और इसके साथ खुशियाँ और प्यार की भावनाएँ जुड़ी हैं।

दीपावली कैसे मनाते हैं?

दीपावली के दिन लोग सुबह उठकर स्नान करके नए कपडे पहनकर आतिशबाजी छोड़ते हैं। पटाखें जलाकर आनंद मनाते हैं। घरों में तरह-तरह के पकवान बनाते हैं। रिश्तेदारों और मित्रों के घर जाकर उनसे मिलकर एक दूसरे को भेंट और मिठाइयाँ देते हैं, बड़ों से आर्शीवाद प्राप्त करते हैं। रात के समय लोग घर को दीपों से सजाते हैं। शाम के वक्त लोग लक्ष्मीपूजा करते हैं। यह माना जाता है कि यह पूजा करने से धन संपत्ती की वृध्दि होती है। कुछ लोग धनतेरस के नाम पर सोना, चाँदी खरीदते हैं। यह दौलत का प्रतीक है। व्यापारी लोग इस दिन नया खाता खोलते हैं। कुछ लोगों के लिए यह नववर्ष की शुरुआत होती है। उत्तर भारत में रात के समय मज़ा शोर के साथ दीपावली मनाते हैं। दक्षिण भारत में सुबह तड़के उठकर पानी में गंगाजल मिलाकर तेल स्नान करते हैं। इससे पवित्रता प्राप्त करने का विश्वास है। देश का कोई भी भाग हो– पूजन, भजन, दीपक, नए कपडे, पटाखें, भेंट और आपसी प्रेम और भाईचारे की भावना के साथ दीपावली त्योहार मनाया जाता है।

आधुनिक दीपावली :

आजकल कई लोग दीपावली के दिन अनाथाश्रम या वृद्धाश्रमों जाकर गरीब एवं निस्सहाय लोगों को अच्छा खाना, नये कपडे आदि देकर अपनी खुशी और उत्सव को सार्थक बनाते हैं। पटाखों के कारखानों में बाल मज़दूरी का प्रचलन है। अलावा पटाखों के कारण प्रदूषण फैलता है। इससे कई लोग पटाखे नहीं खरीदते। आजकल लोग वातावरण और पर्यावरण की शुध्दता को मद्दे नज़र रखते हुए आतिशबाजी कम करते हैं।

उपसंहार :

हर त्योहार के बुनियाद में अच्छाई की विजय का संदेश निहित है। खुशी मनाकर भगवान की याद करना हर उत्सव का आधार है। दीपावली जैसा लोकप्रिय उत्सव भी इसी बात को प्रकट करता है।

10. पोंगल – मकर संक्रांति

प्रस्तावनाः

यों तो संक्रांति प्रत्येक मास में होती रहती है पर सूर्य का मकर और कर्क राशियों में संक्रमण विशेष महत्व का होता है। ये दोनों संक्रमण छः छः मास के अंतर होते हैं। मकर संक्रांति सूर्य के उत्तरायण संक्रमण और कर्क-संक्रांति सूर्य के दक्षिणायन संक्रमण को सूचित करता हैं। उत्तरायण काल में दिन लंबा होता है और रात छोटी होती है। दक्षिणायन काल में रात लंबी और दिन छोटा होता है।

'पोंगल'– नाम का कारण :

पोंगल तमिल भाषियों का एक महत्वपूर्ण त्योहार है। इसको 'मकर संक्रांति' भी कहते हैं। यह मकर राशि में सूर्य के प्रवेश के समय मनाया जाता है। अतः उसे मकर संक्रांति कहते हैं। यह उत्तरायण का प्रारंभ होने को सूचित करता है। कृषक लोग धान और ईख की फ़सलें काटकर अपने छः महीने के परिश्रम का फल पाने के आनंद में सूर्य देवता को मूँग का अन्न (तमिल में 'पोंगल') चढ़ाकर पूजा करते हैं। अतः इस त्योहार को तमिलभाषी 'पोंगल' के नाम से मनाते हैं।

पोंगल का पूर्वदिन 'भोगी' के नाम से मनाया जाता है। उस दिन सूर्योदय के पहले ब्रह्ममुहूर्त में घर के पुराने कूडे-करकट जलाकर 'भोगी-भोगी' कहकर छोटे-छोटे लड़कों से लेकर बूढ़े तक मनाते हैं। पोंगल के दिन जिस शुभ घडी में सूर्य का मकर राशी में प्रवेश होता है उस समय मूँग का अन्न पकाते हैं। जब वह अन्न उबलकर ऊपर आता है, तब घर के स्त्री-पुरुष, छोटे-बड़े, सब लोग 'पोंगलो पोंगल' कहकर सूर्य देवता को आरती दिखाकर त्योहार मनाते हैं।

पोंगल के एक महीने पहले से ही सब अपने घर को लीपा पोतीकर, दीवारों पर भिन्न-भिन्न रंगों से सजाते हैं। गली कूचों में, बाजार में चहल-पहल अधिक होने लगती है। बाज़ार में जाकर नये कपड़े खरीदते हैं, नये कपडे सिलवाते हैं और पोंगल के दिन नये कपड़े पहनकर मित्रों और बंधु-बांधवों के बीच में मिठाई के साथ, पान सुपारी, फल, ईख आदि बांट देते हैं।

कृषकों का त्योहार :

यह त्योहार मुख्यतया कृषकों का त्योहार माना जाता है। गाय, बैल, भैंस आदि कृषकों की संपत्ति हैं। छः महीने खेतीबाडी के परिश्रम का फल वे पाते हैं। वह दिन उनके लिए इतना बडा पर्व का दिन होता है कि श्रमिकों को और खेत में काम करनेवाले मज़दूरों को इनाम आदि देते हैं। नये कपड़े, मिठाई अथवा रकम आदि भी दिया जाता है।

माट्टु पोंगल :

पोंगल का अगला दिन ढ़ोरों का, मवेशियों का दिन माना जाता है। मवेशियों को तमिल भाषा में 'माडु' कहते हैं। अतः वह दिन माट्टु पोंगल के रूप में मनाया जाता है। मवेशियों के द्वारा खेत जोता जाता

है। गाय, भैंस से दूध, दही, घी आदि प्राप्त होते हैं। वे अपनी खुशी, पशु सपंत्ति के साथ मनाते हैं। उस दिन सभी मवेशियों को खूब नहलाकर उनके सींगों पर रंग चढ़ाकर, छकड़ों का साफ़ करके, मवेशियों को छकडों में जोतकर शामको उनका जुलूस निकालते हैं। 'पोंगलो पोंगल' कहते-कहते उन छकड़ों में बंधे बैलों को प्रोत्साहित करते हैं। गाँवों में माट्टुपोंगल का आकर्षक दृश्य देखा जा सकता है। छकड़ों में ग्राम के बच्चे नये कपड़े पहनकर बैलों में बैठकर चिल्लाते, शोर मचाते, आनंद मनाते हैं।

काणुम पोंगल :

पोंगल के तीसरे दिन 'काणुम पोंगल' कहते हैं। उस दिन श्रमिक, मज़दूर लोग अपने-अपने यजमानों से मिलकर इनाम पाते हैं। इसे कृषकों का दिन अथवा 'तिरुवल्लुवर दिन' के नाम से तमिलनाडु सरकार मनाती है।

तिरुवल्लुवर दिवस :

पोंगल समारोह के एक अंश के रूप में तमिल भाषा के संत कवि 'तिरुवल्लुवर' की प्रशस्ति में तिरुवल्लुवर दिवस मनाया जाता है। तिरुवल्लुवर ने अपने तिरुक्कुरल में कृषि संबंधी अनेक जानकारियाँ दी हैं। इसलिए यह पोंगल के साथ मनाया जाता है।

जल्लिकट्टु :

उस दिन 'जल्लि कट्टु'नाम से एक स्पर्धा चलायी जाती है। स्पर्धा गाँव के युवकों में होती है। मुख्य-मुख्य कृषकों की बस्तियों में गाँव के मज़बूत साँड के सींग में ताड़ के पत्तों के गुच्छे के साथ एक कपडे में रुपये बांधकर दौड़ाया जाता है। जो युवक उस साँड को अपने वश में करके उसे पछाडेगा उसको वे रुपये मिलेंगे। गाँव भर के लोग खचा-खच इकट्ठे होकर वह स्पर्धा देखेंगे।

विभिन्न राज्यों में पोंगल त्योहार :

उत्तर-पूर्व में मकर-संक्रांति को 'खिचड़ी' कहते हैं। इस दिन लोग खिचडी ही खाते हैं और खिचड़ी तथा तिल का लड्डू दान करते हैं। महाराष्ट्र में विवाहित युवतियाँ पहले संक्रांति को तेल, कपास, नमक आदि सौभाग्यवती स्त्रियों को देती हैं और सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपनी सहेलियों को हल्दी, रोटी, तिल और गुड़ देती हैं। पंजाब में यह त्योहार लोहडी के रूप में मनाया जाता है। गंगासागर में इस दिन बड़ा भारी मेला रहता है।

उपसंहार :

त्योहार मानव के दुखमय जीवन के बीच में आनंद देने के लिए, व्यापारियों, श्रमिक-मज़दूरों के जीवन में सरसता लाने के लिए मनाये जाते हैं। पोंगल के त्योहार में हमें जीवन शक्ति देनेवाले सूर्य देवता की पूजा की जाती है। उसके कारण ही वर्षा होती है। इससे खेती का काम सुखमय संपन्न होता हैं।

❀ ❀ ❀ ❀

11. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

भूमिका :

अबुल फ़कीर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम यानी हमारे प्रिय डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भारत के ग्यारहवाँ राष्ट्रपति थे। उनका जीवन हर आदमी के लिए एक उदाहरण है। उनसे हमें बहुत बातें सीखने को मिलती हैं और कुछ कर दिखाने का प्रोत्साहन मिलता है।

जन्म और शिक्षा :

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म तमिलनाडु के रामेश्वरम शहर में 1931 ई. में एक साधारण परिवार में हुआ। अब्दुल कलाम में कुछ कर दिखाने का जोश पहले से ही था। कई मुश्किलों का सामना करते हुए उन्होंने पढ़ाई की। विज्ञान में विशेष रुचि होने के कारण वे विज्ञान में पूरा ध्यान देकर पढ़ते थे। उनकी बुद्धि तीव्र थी और अनुसंधान में विशेष लगाव था।

कार्यक्षेत्र :

हैदराबाद स्थित सेना अनुसंधान और विकास प्रयोगशाला में आपने काम किया। उनके नेतृत्व में कई खोज़ कार्य हुए और नई तकनीकी का प्रयोग हुआ।

उपलब्धियाँ :

देश सुरक्षा के क्षेत्र में उन्होंने कई वैज्ञानिक अनुसंधान करके नये-नये प्रक्षेपणास्त्र का आविष्कार किया। अग्नि, पृथ्वी, आकाश, त्रिशूल आदि प्रक्षेपणास्त्र बनाकर भारत को बुलन्दियों पर पहुँचा दिया। रक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय अस्त्रों की बराबरी करने में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के नेतृत्व में भारत सक्षम साबित हुआ। उन्होंने यह भी दिखाया कि विज्ञान में कोई भी खोज सार्थक ही रहती है। उन्होंने यह साबित किया कि भारतीय वैज्ञानिकों में विशेष क्षमता और प्रतिभा है और भारत का नाम संसार के विकसित देशों की सूची में रहेगा।

सन् 2020 ई. में भारत :

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का **'सन् 2020 ई. सपना'** बहुत ही प्रेरणादायक है। वे चाहते थे कि 2020 तक भारत विकास के उच्च्व स्तर पर होगा। उनकी चाह थी कि शिक्षा, अनुसंधान, विज्ञान आदि क्षेत्रों में भारत प्रथम स्थान में पहुँच जाए। आज हम उनके सपने का साकार होते देख रहे हैं।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का व्यक्तित्व :

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एक तपस्वी जैसे सरलता का जीवन बिताते थे। वे दिन में 18 घंटे काम करते थे। संगीत में विशेष रुचि होने के कारण वीणा बज़ाते थे और रोज़ संगीत का रियाज़ करते थे। वे अपने गुरुओं को अपनी प्रेरणा मानते थे। उन्होंने अपने बचपन और यौवन में कई संघर्षों का सामना किया। पर हर मुश्किल का सामना करके अपनी क्षमता और शक्ति को बढ़ाया। किसी भी परिस्थिति में आप

सहयोगी वैज्ञानिकों के प्रति आदर और प्रेमपूर्ण व्यवहार करते थे। अध्यापन कार्य उन्हें बहुत प्रिय था। वे राष्ट्रपति पद से निवृत्त होने के बाद अध्यापन कार्य में लग गये थे। राष्ट्रपति भवन में रहते समय भी उन्होंने बहुत सरल जीवन बिताया। अपनी आत्मकथा 'अग्नि के पंख' (wings of fire) में अपने जीवन के भिन्न पहलुओं का वर्णन किया है।

बच्चों के प्रति लगाव :

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलम को बच्चे और विद्यार्थियों के प्रति बहुत लगाव था। उनसे मिलकर उनके प्रश्नों का उत्तर देकर, उनके उत्साह को बढ़ावा देना उन्हें बहुत पसंद था। उनका मानना था कि बच्चे अगर शुरू से सही रास्ते पर लगाए जाते हैं तो हमारा भारत संसार का सर्वश्रेष्ठ देश बनेगा।

राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम :

25 जुलाई सन् 2002 ई. में इस महान आदमी ने राष्ट्रपति का पद ग्रहण किया। उन्होंने दिखाया कि राजनीति में सरलता और ईमानदारी संभव है। अपने कार्यकाल में आप देश की उन्नति करने में ही लगे रहे। आप अपने संपूर्ण कार्यकाल में सरलता ही का अनुसरण किया।

उपसंहार :

यह भारत का सौभाग्य है कि उसे डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे राष्ट्रपति मिले। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के सपनों का साकार करना हमारा कर्तव्य है।

❃ ❃ ❃ ❃

12. महात्मा गाँधी

भूमिका :

भारतीय जनता में देश की स्वतंत्रता के लिए संग्राम करने की प्रेरणा का बीज 1885 ई. में बोया गया था। इस बीज को पूर्ण रूप से अंकुरित करने और पनपने देने का श्रेय महात्मा गाँधी को ही जाता है। अपने जीवन के आरंभ काल से ही सत्य के लिए अहिंसात्मक रीति से लड़ने में मोहनदास करमचंद गाँधी जी तत्पर थे। वे मानते थे कि मानव मात्र की सर्वांगीण उन्नति के लिए मानव को सब प्रकार से मुक्त रहना आवश्यक है। अतएव आपने भारतीयों की पूरी स्वतंत्रता के लिए अहिंसात्मक संग्राम आरंभ किया।

जन्म और प्रारंभिक जीवन :

2, अक्टूबर 1869 में करमचन्द गाँधी और पुतली बाई की सन्तान के रूप में पोरबन्दर में जन्मे मोहनदास अपने स्कूली जीवन में साधारण छात्र के रूप में ही थे। परन्तु अपनी माता से रामायण, हरिश्चन्द्र की कथाओं को सुनकर तथा पिता के अनुसरण में सत्य आचरण सीखकर मोहनदास सच्चरित्रवान बने। आप इंग्लैंड में बारिस्टर की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर वकालत करने आफ्रीका गये। वहाँ प्रवासी भारतियों और

आफ्रीका के निवासियों पर अंग्रेज़ शासकों द्वारा जो अत्याचार हो रहा था, उसे देखकर उनका खून खौलने लगा। वहाँ के लोगों की बुरी दशा को दूर करने के लिए गाँधीजी ने अंग्रेज़ी सत्ता के विरुद्ध सत्याग्रह किया और उसमें सफलता पायी। दक्षिण आफ्रीका में प्राप्त सफलता के साथ गाँधीजी 1915 में भारत वापस आये।

सत्याग्रह आंदोलन :

भारत में निलहे गोरों के द्वारा भारतीय जनता पर जो पाशविक अत्याचार हो रहा था उसके विरुद्ध गाँधीजी ने चम्पारण में सत्याग्रह किया। उसमें वे पूर्ण रूप से सफल हुए।

इसके बाद के आंदोलनों में भी वे सत्य और अहिंसा के प्रयोग द्वारा अंग्रेज़ सरकार की दमन नीति का सामना करने में उत्तरोत्तर सफल होते गये। तदनुसार भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई और उन्होंने सर्वप्रथम विश्व को अहिंसा का राह दिखाया। गाँधीजी ने देखा, अनुभव किया कि मानव की सर्वांगीण उन्नति के लिए उसे सत्य और अहिंसा का सहारा लेना आवश्यक है।

बुनियादी शिक्षा का प्रवर्तन :

भारतीय जीवन के सभी क्षेत्रों में उन्नति लाने के लिए उनका हृदय-परिवर्तन आवश्यक था। अतः जनता को सही रास्ते पर ले चलने के लिए, सबको समान अधिकार दिलाने के लिए गाँधीजी ने कई बार अनशन व्रत किया। अंग्रेज़ों की शिक्षा-नीति से असंतुष्ट होकर गाँधीजी ने 'बुनियादी शिक्षा' नाम से एक नयी शिक्षा प्रणाली का प्रवर्तन किया।

पत्रिकाएँ :

'हरिजन' नामक पत्रिका चलाकर उसके द्वारा हरिजनोद्धार का मार्ग दिखाया। 'यंग इंडिया' शीर्षक पत्रिका द्वारा भारतीय समाज को नई दिशा दिखायी।

वे सभी धर्मों को समान मानते थे। अतएव अपनी प्रार्थना सभा में सर्वधर्म प्रार्थना करते थे।

हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना :

दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार करने के लिए गाँधीजी ने 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' की स्थापना की थी और अपने तीसरे पुत्र देवदास गाँधी को प्रथम प्रचारक के रूप में मद्रास भेजा था।

कस्तूरबा गाँधी का योगदान :

गाँधीजी की सामाजिक सेवा, राजनीतिक कार्य, धार्मिक कार्य सबमें उनकी पत्नी कस्तूरबा ने खूब साथ दिया। आप उनका साथ देकर उनकी सहायता उत्साह के साथ करती थीं। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि उनकी महानता में कस्तूरबा का बहुत बड़ा हाथ था।

विभिन्न समाज सुधार कार्य :

गाँधीजी ने भारत में हरिजनों की सेवा के लिए हरिजन सेवक संघ, गो संरक्षण के लिए गो सेवा संघ, खादी के प्रचार के लिए खादी ग्रामोद्योग जैसी संस्थाओं की स्थापना करके उनको चलाने के लिए उचित लोगों की नियुक्ति भी की। उनके ऐसे मानवतावादी कार्यों से द्रवित होकर नेताजी सुभाष चंद्रबोस ने उनको 'देश पिता' कहा। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने उन्हें 'महात्मा' कहा और जनता ने उन्हें 'बापू' कहकर संबोधित किया।

उपसंहार :

महात्मा गाँधी का निधन दि. 30.1.1948 को हुआ था। प्रतिवर्ष तीस जनवरी को त्यागी दिवस के रूप में, शान्ति दिवस के रूप में मनाया जा रहा है।

महात्मा गाँधीजी का विश्वास था कि मनुष्य स्वाभावतया अच्छा है। परिस्थितियाँ उसे बुरा या भला बनाती हैं। अतः वे कहते थे कि पापी से घृणा न करो उसके पापों से घृणा करो।

❁ ❁ ❁ ❁

II. पत्र-लेखन

1. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र लिखिए जिसमें अपने परिवार की आर्थिक स्थिति का उल्लेख करते हुए आर्थिक सहायता पाने का (शिक्षण शुल्क से छूट मांगते हुए) निवेदन किया गया हो।

दि. 20.03.2023

सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय,

....

....

महोदय,

विषयः आर्थिक सहायता (शिक्षण शुल्क से छूट) पाने के संबंध में।

सादर प्रणाम। विनम्र निवेदन है कि मैं इस विद्यालय की बारहवीं कक्षा का छात्र हूँ। पिता एक फैक्ट्री में काम करते थे। पिछले महीने हड़ताल के कारण कारखाना बंद हो गया। इससे पिताजी बेरोज़गार हो गए हैं। इस स्थिति में वे मेरा मासिक शुल्क देने में असमर्थ हैं। मै अपनी कक्षा में गतवर्ष प्रथम आया था। इसके अलावा मैं विद्यालयी क्रिकेट टीम का कप्तान भी हूँ।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे विद्यालय शिक्षण शुल्क से छूट प्रदान करने की कृपा करें ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। आपकी इस कृपा के लिए मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी छात्र

....

.... कक्षा

.... अनुक्रमांक

2. विद्यालय की प्रयोगशाला में आपकी असावधानी से हुए नष्ट पर लगाये गये जुर्माने से माफ़ी माँगते हुए पत्र लिखिए।

सेवा में

प्रधानाचार्य

....

....

विषयः जुर्माना माफ़ करने के संबंध में।

महोदय,

सादर प्रणाम। सविनय निवेदन है कि मैं इस विद्यालय की बारहवीं कक्षा का छात्र हूँ। कल दूसरे पीरियड में प्रयोगशाला में नाइट्रिक एसिड की बोतल मेरे हाथ से छूटकर गिर गई। जिससे बोतल टूट गई और फर्श पर एसिड बिखर गया। अतः मुझपर एक हज़ार रूपये का जुर्माना लगाया गया है। श्रीमानजी, मुझसे अनजान में हुई गलती की क्षमा कीजिए। मेरे पिताजी चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी हैं और यह जुर्माना भरने में असमर्थ हैं।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति पर सहानुभूति पूर्वक विचार करते हुए जुर्माना माफ़ करने की कृपा करें। भविष्य में ऐसी गलती नहीं करूँगा।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी छात्र

....

.... कक्षा

.... अनुक्रमांक

दिनांक : 19.03.2023

3. विद्यालय के पुस्तकालय के लिए अधिक संख्या में हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ मँगवाने का अनुरोध करते हुए पत्र लिखिए।

सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय,

....

....

विषयः हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं को मंगवाने के संबंध में।

महोदय,

सादर प्रणाम। मैं इस विद्यालय की बारहवीं कक्षा का छात्र हूँ। इस विद्यालय का पुस्तकालय अत्यंत समृद्ध है। यहाँ बहुत सारी पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ मंगवायी जाती हैं। पर इनमें से अधिकांश अंग्रेज़ी में हैं,

इसलिए हिन्दी माध्यम से पढ़नेवाले छात्र पुस्तकालय के संपूर्ण उपयोग से वंचित रह जाते हैं। हिन्दी में अनेक उत्तम पत्रिकाएँ निकलती हैं जैसे 'सुमन-सौरभ', 'कादम्बिनी', 'चम्पक', 'विज्ञान प्रगति' 'आजकल' आदि- इन पत्रिकाओं को मंगवाने की कृपा करें।

इससे हिन्दी माध्यम में पढ़नेवाले छात्र भी लाभान्वित होंगे।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी छात्र

....

दिनांक : 14.03.2023

4. अपने क्षेत्र के खाद्य एवं आपूर्ति अधिकारी को एक नया राशन कार्ड जारी करने के लिए प्रार्थना पत्र लिखिए।

सेवा में

खाद्य एवं आपूर्ति अधिकारी

.... तहसिलदार

.... जिला

विषयः नया राशन कार्ड पाने के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं .... का निवासी हूँ, जो .... तहसील में शामिल है। गत सप्ताह मेरे पिताजी जब दूकान से राशन लेकर लौट रहे थे तभी राशन कार्ड कहीं गिर गया। बहुत ढूँढने पर भी इसका पता न चला। हमने उस दूकान पर भी पता किया कि शायद कोई वहाँ जमा करा गया हो। पर सारा प्रयत्न व्यर्थ रहे। दो दिनों के बाद हमने राशन कार्ड गुम हो जाने की सूचना थाने में दे दी। पर एक सप्ताह से अधिक समय बीत जाने पर भी उसका कुछ पता न चला। अब हमें राशन लेने के लिए नए राशन कार्ड की आवश्यकता है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि हमारी परेशानियों को ध्यान में रखते हुए नया राशन कार्ड प्रदान करने की कृपा करें। हमारा परिवार आपका आभारी रहेगा।

सधन्यवाद।

भवदीय,

(ह./-)

स्थान :..................

दिनांक :..................

5. सीमा सुरक्षा बल, दिल्ली को कुछ लिपिकों की आवश्यकता है। अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए आवेदन पत्र प्रस्तुत कीजिए।

सेवा में

सहायक कमॉण्डण्ड, (भरती प्रकोष्ट)
सीमा सुरक्षा बल
जडौदा कला, दिल्ली

विषयः लिपिक पद पर भर्ती हेतु आवेदन पत्र।

महोदय,

दिनांक .... को प्रकाशित दैनिक – जागरण समाचार पत्र के विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि सीमा सुरक्षा बल, दिल्ली को कुछ लिपिकों की आवश्यकता है। उक्त पद के लिए मैं अपना आवेदन पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरा आत्म परिचय निम्न प्रकार है–

1. नाम -
2. पिता का नाम -
3. माता का नाम -
4. जन्म तिथि -
5. पता एवं मोबेल नं. -
6. शैक्षिक योग्यताएँ - बी.एस.सी. में प्रथम श्रेणी
7. शारीरिक योग्यता - लंबाई 180 से.मी.
   सीना 80 से.मी.
8. अन्य योग्यता - कंप्यूटर टंकण – 40 शब्द प्रति मिनट। (हिन्दी और अंग्रेज़ी)

घोषणाः मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से देश की सेवा करूँगा।

सधन्यवाद।

भवदीय,
.... नाम
.... हस्ताक्षर
.... पता
....

दिनांक :
संलग्न :
1.
2.
3.
4.

6. अपने मित्र को, स्कूल में संपन्न वार्षिक कार्यक्रम का विवरण देते हुए एक पत्र लिखिए।

मेरे प्रिय मित्र नारायणन,

तुम कैसे हो? मैं यहाँ सकुशल हूँ। तुम्हारे माँ-बाप और बहन कैसे हैं?

पिछले सप्ताह मेरे स्कूल में वाषिकोत्सव संपन्न हुआ। इस उत्सव में आने के लिए मैंने तुम्हें निमंत्रण भेजा था। लेकिन तुम न आ पाये। इस उत्सव के संबंध में इस पत्र में लिख रहा हूँ।

इस साल हमारे स्कूल का वार्षिकोत्सव अत्यंत धूम-धाम से संपन्न हुआ। इसमें हमारे राज्य के शिक्षा मंत्री भी पधारे थे। उन्होंने विद्यार्थियों के कर्तव्य पर अत्यंत सारपूर्ण भाषण दिया। हमारे स्कूल के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मेरी कक्षा के छात्र-छात्राओं ने मिलकर 'बंदी' एकांकी का नाटक रूप प्रस्तुत किया। इस नाटक में मैं भी शामिल हुआ। हमारे नाटक के लिए दूसरा पुरस्कार मिला।

प्रथम कक्षा से बारहवीं कक्षा तक, प्रथम रैंक प्राप्त सभी छात्र-छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किये गये। अलावा, खेल में, अनुशासन में उत्कृष्ट रहनेवाले विद्यार्थियों को भी पुरस्कार दिये गये। हमारे शिक्षा मंत्री ने पुरस्कार वितरण किया। हमारे स्कूल के प्रधानाचार्य ने स्वागत भाषण दिया। पूरे समारोह का संचालन मेरे मित्र स्वामिनाथन ने सुचारू रूप में किया। समारोह के अंत में मैंने धन्यवाद प्रस्तुत किया। राष्ट्रगान के साथ समारोह समाप्त हुआ। अगर तुम आते तो अंतयंत आनंद उठाते।

तुम्हारे माँ-बाप को मेरा प्रणाम समर्मित करना।

प्यार और स्नेह के साथ

तुम्हारा मित्र

.... हस्ताक्षर

एस.गणपति

दिनांक : ....

सेवा में

नारायणन

....

....

....

III. फार्म भरने का तरीका

प्रश्न : 1 आप एम. सतीशकुमार हैं। बैंक आफ बड़ौदा, टी.नगर शाखा, चेन्नई में आपकी बचत खाता संख्या ....123 है। आप आहरण पर्ची (withdrawal form) का इस्तेमाल करके आपकी खाता से रु 5000/- आहरण कीजिए।

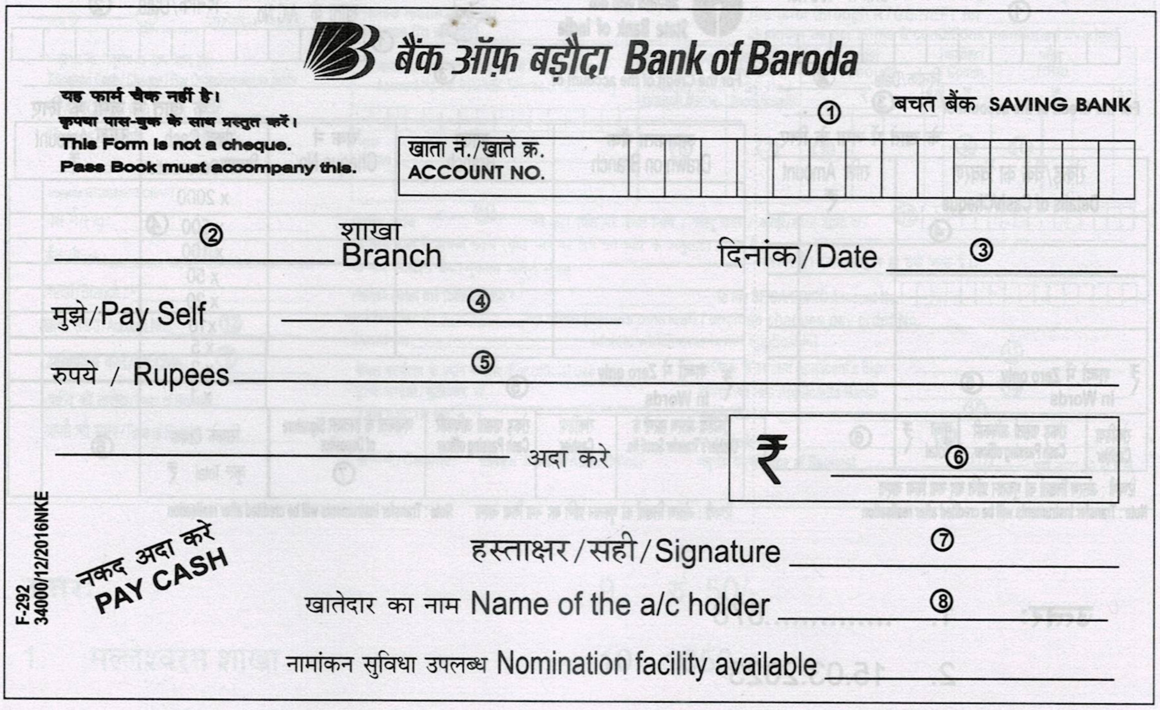
बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

यह फार्म चैक नहीं है।
कृपया पास-बुक के साथ प्रस्तुत करें।
This Form is not a cheque.
Pass Book must accompany this.

① बचत बैंक SAVING BANK

खाता नं./खाते क्र. ACCOUNT NO.

② शाखा Branch

दिनांक/Date ③

मुझे/Pay Self ④

रुपये / Rupees ⑤

अदा करे

₹ ⑥

नकद अदा करे PAY CASH

F-292 34000/12/2016NKE

हस्ताक्षर/सही/Signature ⑦

खातेदार का नाम Name of the a/c holder ⑧

नामांकन सुविधा उपलब्ध Nomination facility available

उत्तरः
1. 123
2. टी. नगर
3. 15.03.2023
4. मुझे
5. पाँच हज़ार मात्र
6. रु. 5000/-
7. हस्ताक्षर
8. एम. सतीशकुमार

प्रश्न : 2 आप के. प्रदीप हैं। भारतीय स्टेट बैंक, सेकन्द्राबाद शाखा में आपकी बचत खाता संख्या ....678 है। जमा पर्ची (Deposit form) का इस्तेमाल करके उपर्युक्त खाते में रु 4800/- जमा कीजिए।

जमा पर्ची/Pay in slip — रोकड़/अंतरण Cash/Transfer

भारतीय स्टेट बैंक State Bank of India

खाता क्रं A/C No. ①

दिनांक/Date ②

For the Credit of the account of ③ के खाते में जमा के लिए

रोकड़/चेक का विवरण Details of Cash/Cheque	राशि Amount ₹
④	
₹ शब्दों में Zero only In Words ⑤	

रोकड़िया Cashier	रोकड़ पासर्ता अधिकारि Cash Passing officer	कुल Total ₹	⑥

टिप्पणी : अंतरण लिखतों को भुकतान प्राप्ति बाद जमा किया जाएगा
Note : Transfer Instruments will be credited after realisation

Note : Use Separate slips for depositing Cash, Instruments Drawn on Banks, Clearing Instruments & Outstation Instruments
टिप्पणी : कृपया नकद, बैंक पर आहरित लिखतों समाशोधनलिखतों और अन्य स्थान के लिखतों के लिए अलग-अलग पर्चियों का प्रयोग करें।

जमा पर्ची/Pay in slip — रोकड़/आंतरण Cash/Transfer

भारतीय स्टेट बैंक State Bank of India

खाता क्रं A/C No. ① दिनांक/Date ②

For the Credit of the account of ③ के खाते में जमा के लिए

अदाकता बैंक Drawn on Branch	शाखा Branch	चेक नं Cheque No.	रोकड़ Cash विवरण Denomination	राशि Amount ₹	
			x 2000		
			x 500 ④		
			x 100		
			x 50		
			x 20		
			x10		
₹ शब्दों में Zero only In Words ⑤			x 5		
			x 2		
			x 1		

रोकड़िया अंतरण सारणी क्रं Cashier's Transfer Scroll No.	रोकड़िया Cashier	रोकड़ पासर्ता अधिकारि Cash Passing officer	जमाकर्ता के हस्ताक्षर Signature of Depositor ⑦	सिक्के Coins / कुल Total ₹	⑥

टिप्पणी : अंतरण लिखतों को भुकतान प्राप्ति बाद जमा किया जाएगा Note : Transfer Instruments will be credited after realisation

उत्तरः

1. 678
2. 15.03.2023
3. के. प्रदीप
4. 2 x 2000 = 4000; 8 x 100 = 800
5. चार हज़ार आठ सौ मात्र
6. रु. 4800/-
7. हस्ताक्षर

प्रश्न : 3 आप के. पवन रवीन्द्रा, मल्लेश्वरम, बेंगलूरू के निवासी हैं। कुलसचिव, द.भा.हिं.प्र.सभा, टी.नगर, मद्रास के नाम रु.1000/- की डी.डी. पंजाब नेश्नल बैंक से टी.नगर शाखा में भुगतान हेतु प्राप्त करें।

प्र.का.: 7, भिकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली
H.O.:7, Bhikaji Place, New Delhi

शा.का./.B.O.: ①

दिनांक/Date ② / /20

नकद/चेक/भुगतान आदे/बचत निधि/ओडी/सीसी के नाम से ③ आरटीजीएस/एनईऊटी/ ड्राफ्ट के अनुरोध के साथ प्राप्त हुए।
Received Cash / Cheque / Pay Order/request to debit/ SF/CA/OD/CC with ₹ ④

(Rupees in words ⑤)

towards RTGS/NEFT/DRAFT

पक्ष में/Fvg.:

बैंक/Bank.: ⑥

शाखा/Branch .:

खाता संख्या/Account No.: ⑫

आईएफएस कोड/IFS Code.: ⑦

प्राप्ति की तारीख/Date of Receipt.:

प्राप्ती की समय/Time of Receipt.:

पंजाब नेशनल बैंक punjab national bank

आवेदन फार्म APPLICATION FORM — आरटीजीएस RTGS — एनइएफटी NEFT — ड्राफ्ट DRAFT
(जो लागू न हो उसे काट दे Strike down which is not applicable)

दिनांक Date ② / /20

शा.का./.B.O.: ①

कृपया नीचे बताये अनुसार ③ पर रुपये ④ (रुपये ⑤ का ड्राफ्ट जारी करें/आरटीजीएस/एनईएफटी द्वारा अंतरित करें पीछे दी गई शर्तों एवं निबंधों के अनुसार।

Please issue drat on /transfer through RTGS/NEFT for
(Rupees (in words) as under as per terms & conditions mentioned overleaf

आरटीजीएस/एनईएफटी के लिए खाता सं./लाभग्राही का नाम Account No. for RTG/NECT/Name of Beneficiary	लाभग्राही बैंक तथा शाखा का नाम Beneficiary Bank & Branch Name	आईएफएससी सं./ शाखा क्रम सं. IFSC No./ Branch Serial No.	राशि Amount ₹	पैP	कमीशन Comm. ₹	जोड़ Total ₹	पैP
नाम Name	⑥	⑦	⑧		⑨	⑩	

कृपया रुपये ⑪ की कुल राशि मेरे बचत निधि / चालू खाते / ओड़ी/सीसी खाता सं. ⑫ के नामे डाल दे अथवा नकद (पृष्ठ भाग पर दिये गये ब्यौरे के अनुसार) प्रस्तुत है।
के नाम आहरित चैक/भुगतान आदेश संख्या संलग्न है। (जो लागू न हो उसे काट दें।)

Please debit the total amout ₹ to my SF/CA/OD/CC Account No.
or I tender ₹ by cash (details overleaf) / enclose cheques pay order No.
drawn on (delete which ever is not applicable).

केवल कार्यालय के प्रयोग के लिए/For official use only
ट्रांजे.आईडी/यूटीआर सं.
TXN ID/UTR No.

खजांची/Cashier — प्राधिकृत अधिकारी/Auth. Officer

आदेवदक के हस्ताक्षर/ Applicant's Sign ⑬

आवेदक का नाम/ Applicants Name ⑭

पता/ Address ⑮

मो.नं/ Mobile No. ⑯

अनुरोध समय/ Time of Request ⑰ पूर्वा.अपरा./ A.M.P.M.

उत्तरः

1. मल्लेश्वरम शाखा
2. 15.03.2023
3. कुलसचिव, द.भा.हिं.प्र.सभा मद्रास, टी.नगर
4. 1000
5. एक हज़ार
6. पंजाब नैश्नल बैंक, टी.नगर
7. xxxxxx
8. 1000
9. रु. 50/-
10. 1050
11. 1000
12. xxxxxx 368
13. हस्ताक्षर
14. के. पवन रवीन्द्रा
15. पता
16. xxxxxx
17. पूर्वाह्न 11.00 बजे

प्रश्न : 4 आप सी. रेमा, त्रिच्चूर की निवासी हैं। प्रधान सचिव, द.भा.हिं.प्र.सभा, टी.नगर, चेन्नई के नाम रु.10 का भारतीय पोस्टल आर्डर प्राप्त करें।

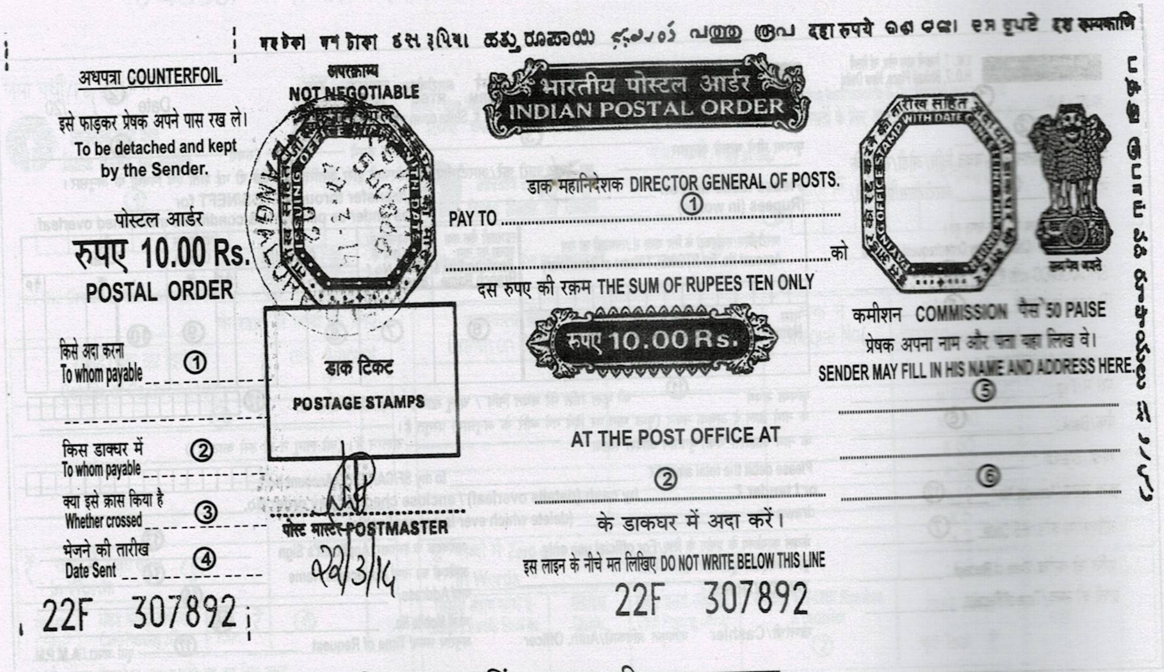

उत्तर:
1. प्रधान सचिव, द.भा.हिं.प्र.सभा, टी.नगर, मद्रास
2. टी.नगर
3. नहीं
4. 15.03.2023
5. सी. रेमा
6. xxxxxxx त्रिच्चूर, केरल

प्रश्न : 5 आप अपने चार मित्रों के साथ चेन्नई से रामेश्वरम जानेवाली हैं। रेलगाड़ी में आरक्षण हेतु फारम भरिए।

उत्तर: 1. रामेश्वरम एक्सप्रेस; 2. 30.12.2022; 3. II; 4. 4; 5. चेन्नै एग्मोर; 6. रामेश्वरम; 7. जी.कलैचेल्वी, के. वल्ली, आर. पद्मावती, एन. तिरुप्पावै, एम. सेल्वन; 8. स्त्री, स्त्री, स्त्री,स्त्री, पु; 9. 25, 28, 30, 27, 21; 10. नि.शा, म.शा, म.शा, नि.शा, नि.शा 11. हस्ताक्षर; 12. xxxx; 13. 15.03.2023; 14. पूर्वाह्न 11.00 बजे

दक्षिण रेलवे SOUTHERN RAILWAY

आरक्षण / रद्दकरण मांगपत्र RESERVATION / CANCELLATION FORM

यदि आप डॉक्टर तो कृपया (✓) का निशान लगाये। आपत स्थिति में आपसे मदद ली जा सकती है। If you are a Medical Practitioner. Please tick(ü)in box. You could be of help in emergency.

यदि आप वरिष्ठ नागरिक रियायत चाहते है तो वाक्य में 'हाँ या नहीं' लिखें। (यदि हाँ, तो कृपया प्रमाण की अनुपस्थिति में किराए का करक वसूल किया जाएगा। यात्रा में के दौरा आयु का प्रमाण साथ रखें)

If you want Sr. Citizen concession, please write 'Yes/No' in box. (If Yes, please carry a proof of age during the journey to avoid inconvenience of penal charging under extant Railway Rules. क्या आप अपग्रेड़ का लाभ साफ़ करना चाहते है? बॉक्स में 'हाँ या नहीं' लिखें। (यदि इस विकल्प का प्रयोग नहीं किया जाता तो पूरे किराए का भुगतान करने वाले यात्रियों को स्वत: अपग्रेड किया जा सकता है)

Do you want to be upgraded? Write Yes/No in the box. If this opetion is not exercised, full fare paying passengers may be upgraded automatically.

गाड़ी का संख्या और नाम Train No. & Name ① .... यात्रा की तारीख Date of Journey ② ....

श्रेणी class ③ .... शायिकाओं/सीटी की सं. No. of Berths / Seats ④ .... स्टेशन से Station From ⑤ ....

स्टेशन तक to ⑥ .... यात्रा का आरंभ करने का स्टेशन Boarding at ....

स्टेशन तक आरक्षण Reservation upto ....

क्र.सं. S.No.	नाम स्पष्ट अक्षरों में (15 अक्षरों से अधिक न हो) Name in Block Letters (not more than 15 letters)	लिंग पु/स्त्री Gender M/F	आयु Age	रियायात/यात्रा प्रधिकार सं. Concession Ticket Authority No.	विकल्प मांगा यदि कोई हो Choice if any निचली शायिका/ऊपर शैय्या Lower/upper/veg.nonveg शाकाहारी/मांसाहारी
1.	⑦	⑧	⑨		⑩
2.					
3.					
4.					
5.					
6.					

5 साल से कम आयु के बच्चे (जिनके लिए टिकट ज़ारी नहीं कि जाते है।) CHILDREN BELOW 5 YEARS (FOR WHOM TICK IS NOT TO BE ISSUED)

क्र.सं. S.No.	नाम स्पष्ट अक्षरो मे Name in Block Letters	लिंग पु/स्त्री Gender	आयु Age
1.			
2.			

आगे की /वापसी यात्रा का विवरण ONWARD / RETURN JOURNEY DETAILS

गाड़ी का संख्या और नाम Train No. & Name.................................... यात्रा की तारीख Date of Journey ....

श्रेणी class .... शायिकाओं/सीटी की सं. No. of Berths / Seats ....

पूरा नाम Name of the applicant ....

पूरा पता Full Address .... आवेदक / प्रतिनिधि की हस्ताक्षर ⑪

.... Signature of the Applicant / Representative

टेलिफोन नं. यदि हा Telephone No. if any ⑫ .... तारीख Date ⑬ .... समय Time ⑭ ....

केवल सरकारी प्रयोग के लिए FOR OFFICIAL USE ONLY

म S.No. Requisition .... PNR No. ....

Seat No. .... Amount Collected ....

Signature of the Reservation Clerk

दक्षिण रेलवे SOUTHERN RAILWAY

आरक्षण / रद्दकरण मांगपत्र RESERVATION / CANCELLATION FORM

यदि आप डॉक्टर तो कृपया (✓) का निशान लगाये। आपत स्थिति में आपसे मदद ली जा सकती है। If you are a Medical Practitioner. Please tick(ü)in box. You could be of help in emergency.

यदि आप वरिष्ठ नागरिक रियायत चाहते है तो वाक्य में 'हाँ या नहीं' लिखें। (यदि हाँ, तो कृपया प्रमाण की अनुपस्थिति में किराए का करक वसूल किया जाएगा। यात्रा में के दौरा आयु का प्रमाण साथ रखें)

If you want Sr. Citizen concession, please write 'Yes/No' in box. (If Yes, please carry a proof of age during the journey to avoid inconvenience of penal charging under extant Railway Rules. क्या आप अपग्रेड़ का लाभ साफ़ करना चाहते है? बॉक्स में 'हाँ या नहीं' लिखें। (यदि इस विकल्प का प्रयोग नहीं किया जाता तो पूरे किराए का भुगतान करने वाले यात्रियों को स्वत: अपग्रेड किया जा सकता है)

Do you want to be upgraded? Write Yes/No in the box. If this opetion is not exercised, full fare paying passengers may be upgraded automatically.

गाड़ी का संख्या और नाम Train No. & Name ......①...... यात्रा की तारीख Date of Journey ......②......

श्रेणी class ......③...... शायिकाओं/सीटों की सं. No. of Berths / Seats ......④...... स्टेशन से Station From

......⑤...... स्टेशन तक to ......⑥...... यात्रा का आरंभ करने का स्टेशन Boarding at ......

स्टेशन तक आरक्षण Reservation upto ......

क्र.सं. S.No.	नाम स्पष्ट अक्षरों में (15 अक्षरों से अधिक न हो) Name in Block Letters (not more than 15 letters)	लिंग पु/स्त्री Gender M/F	आयु Age	रियायात/यात्रा प्रधिकार सं. Concession Ticket Authority No.	विकल्प मांगा यदि कोई हो Choice if any निचली शायिका/ऊपर शैय्या Lower/upper/veg.nonveg शाकाहारी/मॉसाहारी
1.	⑦	⑧	⑨		⑩
2.					
3.					
4.					
5.					
6.					

5 साल से कम आयु के बच्चे (जिनके लिए टिकट ज़ारी नहीं कि जाते है।) CHILDREN BELOW 5 YEARS (FOR WHOM TICK IS NOT TO BE ISSUED)

क्र.सं. S.No.	नाम स्पष्ट अक्षरों मे Name in Block Letters	लिंग पु/स्त्री Gender	आयु Age
1.			
2.			

आगे की /वापसी यात्रा का विवरण ONWARD / RETURN JOURNEY DETAILS

गाड़ी का संख्या और नाम Train No. & Name...... यात्रा की तारीख Date of Journey ......

श्रेणी class ...... शायिकाओं/सीटों की सं. No. of Berths / Seats ......

पूरा नाम Name of the applicant ......

पूरा पता Full Address ......

...... आवेदक / प्रतिनिधि की हस्ताक्षर ⑪

टेलिफोन नं. यदि हा Telephone No. if any......⑫ Signature of the Applicant / Representative

तारीख Date......⑬...... समय Time......⑭

केवल सरकारी प्रयोग के लिए FOR OFFICIAL USE ONLY

म S.No. Requisition ...... PNR No. ......

Seat No. ...... Amount Collected ......

Signature of the Reservation Clerk

प्रश्न : 6

बयो-डेटा (आत्म-परिचय) लिखने का तरीका

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास में मानव संसाधन प्रबंधक (HR Manager) के रूप में काम करने के लिए आप अपना व्यक्ति वृत्त (Curriculam Vitae) तैयार करके प्रधान सचिव के नाम पर भेजिए।

व्यक्ति वृत्त

नाम : सी अभिनव

पिता का नाम : सी रामराव

जन्म की तारीख और आयु : 26 अक्टूबर 1993, 30

पता : नं. 26-4, पवन प्लाज़ा
भीमावरम
मोबाइल : 9952945687
ई.मेल :

शैक्षणिक योग्यताएँ :

क्र.सं.	योग्यता	संस्था का नाम	अध्ययन का वर्ष	प्रतिशत
1.	एमबीए (हेच आर)	यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, काकिनाडा	2013 -2015	81%
2.	बीबीए	सरकार डिग्री कॉलेजए भीमावरम	2010-2013	86%
3.	इन्टरमीडियट (सीईसी)	से. जेवियर जूनियर कॉलेज, भीमावरम	2008-2010	91%
4.	एस.एस.सी	सरस्वती विद्या मंदिर, भीमावरम	2007-2008	95%
5.	राष्ट्रभाषा प्रवीण	द.भा.हि.प्र.सभा, मद्रास	2013	70%

अनुभव : एक उत्पादन इकाई सीमेंट कंपनी, जग्गय्यापेट में व्यक्तिगत प्रबंधक के रूप में 4 वर्ष।

ज्ञात भाषाएँ : अंग्रेज़ी, तेलुगु, हिन्दी, तमिल

हस्ताक्षर

मुकाम : भीमावरम

दिनांक : 15.03.2023

IV. संक्षिप्तीकरण

(1)

यमराज की परीक्षा में नचिकेता खरा उतरा। संसार का कोई भी प्रलोभन उसे अपने निश्चय से डिगा नहीं सका। प्रसन्न होकर यमराज ने उसे उपदेश देना आरंभ किया। "आत्मा न तो कभी पैदा होती है, न मरती है। वह अजर-अमर है और शरीर के नष्ट हो जाने पर भी विद्यमान रहती है।" "आत्मा का ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। ज्ञानी मनुष्य सब प्राणियों के अपने अंदर और अपने आप को सब प्राणियों के अंदर देखता है। सभी के अंदर उसकी आत्मा रहती है, इसलिए न तो वह किसी से राग रखता है, न द्वेष। ऐसा मनुष्य कभी भी अशांत और दुःखी नहीं होता।" "वत्स, आत्मा का ज्ञान वाद-विवाद या तर्क करने से नहीं प्राप्त होता। यह बहुत गूढ़ विषय है और इसे वे ही समझ सकते हैं, जो सांसारिक आकर्षणों को ठुकराकर साधना के मार्ग पर चलते हैं।" "अपने शरीर को यदि तुम एक रथ मानो तो इंद्रियाँ उसके घोड़े होंगी। मन उन घोड़ों की लगाम है और बुद्धि सारथि के स्थान पर है। इस रथ पर बैठकर यात्रा करनेवाला यात्री आत्मा है। उसी के लिए यह सारा खेल रचा गया है।"

शीर्षक : आत्मा का रहस्य

मूल शब्द : 138 **प्रयुक्त शब्द : 57**

यमराज नचिकेता को समझाने लगे कि आत्मा न तो कभी पैदा होती है, न मरती है, वह अमर है। ज्ञानी मनुष्य अपने अंदर सब प्राणियों और अपने को सब प्राणियों के अंदर देखता है। अपने शरीर को यदि रथ माने तो इंद्रियाँ उसके घोडे हैं। मन उन घोडों की लगाम है। बुद्धि सारथि है। इस रथ पर बैठकर आत्मा यात्रा करती है।

(2)

मेरी सेवा के लिए जो दो औरतें तैनात थीं, उनमें से एक तो अल्हड़ -सी थी, जिसे कुछ काम-काज न आता था, पर दूसरी समझदार थी। वह प्रौढ़ा थी। उसकी गोद में भी एक बच्चा था। वह बड़ी फ़िक्र से सब काम करती थी। वह अधिकतर चुप रहती थी जैसे सदा मन ही मन कुछ सोचा करती हो। मिनू को तो उसने इस प्रकार हिला था जैसे वह उसकी बच्ची हो। उसका खुद का बच्चा पाँव-पाँव चलता और मिनू उसके साथ होती; दाल दलती तो मिनू उसके साथ और बरतन मलती तो मिनू भी उसके साथ छोटी-छोटी कटोरियाँ और गिलास मलती दीख पड़ती। अंत को बात इतनी बढ़ी कि वह मिनू को अपनी पीठ से बाँधकर झाड़ू देने लगी। उसका नाम था लखिया। लखिया और मिनू के इस स्नेह-संबंध से लखिया के बच्चे को जो अभाव ज्ञात हुआ उसकी पूर्ति मैं उसे मिनू के फल और मिठाइयाँ दे-देकर करने लगी। वह प्रायः मेरे ही पास खेला करता। फल और मिठाइयाँ खाने से इस बच्चे को और पानी भरने, बरतन मलने तथा बगीचा सींचने से मिनू को थोड़े ही दिनों में स्वास्थ्य का लाभ होता दिखाई पड़ा।

शीर्षक : लखिया और मिनू का बंधन

प्रयुक्त शब्द : 58

मूल शब्द : 127

जेल में लेखिका की सेवा सुश्रुषा के लिए दो औरतें थीं। एक तो अल्हड़ थी और दूसरी समझदार थी। दूसरी औरत अपने बच्चे से भी अधिक ध्यान लेखिका की बच्ची मिनू पर रखती थी। वह सदा शांत रहती थी। लेखिका की बच्ची दूसरी औरत से बहुत हिलमिल गयी थी। उसके सभी काम में हाथ बांटने की कोशिश करती थी। अतः मिनू के स्वास्थ्य में सुधार आया।

(3)

मैं भी चिन्तित हो गया। मैं कोई खास भला नहीं हूँ। देना भूल जाता हूँ, लेना नहीं भूलता। मैं भला हूँ, क्योंकि आलसी हूँ। बुरा होने के लिए हाथ, पाँव और मन को हिलाना पड़ता है। अगले महीने मैंने बुरा आदमी बनने की कोशिश की। मैं घर में हिसाब रखता गया। महीने के अंत में जब उससे हिसाब पूछा तो पाया कि उसने दस रुपये बढ़ा लिए हैं। काफी महँगा प्रमाणपत्र दे रहा था वह मुझे। मैंने दस रुपये भेजकर विश्वविद्यालय से एम.ए. का प्रमाणपत्र ले लिया था जो मुझे जिन्दगी-भर शिक्षित बताने के लिए काफी है। दूकानदार का प्रमाणपत्र जिसे मैं पढ़कर टाँग भी नहीं सकता, 10 रुपये में सिर्फ़ एक महीने के लिए मिलता है। मुझे हर साल 120 रुपये इसलिए देने पड़ते हैं कि एक छोटे से शहर का एक सामान्य दूकानदार मुझे भला आदमी कहे। अगर मैं उससे शेष जिन्दगी यानी लगभग 30 साल सामान खरीदता रहूँ तो लगभग साढ़े तीन हज़ार रुपये मैं सिर्फ़ इसको दूंगा कि उसने मुझे भला आदमी कहा। सारा बाजार मुझे भला कहे, इसके लिए तो पूरी आमदनी बाँट देनी पड़ेगी। मुझे यह मंजूर नहीं। मैं हिसाब देखने लगा। भले आदमी के उदाहरण के लिए किसी और का उपयोग होगा।

शीर्षक : बेचारा भला आदमी

प्रयुक्त शब्द : 63

मूल शब्द : 149

लेखक पहले हिसाब देखे बिना दूकानदार को पैसे देते थे। दूकानदार ने इसलिए उन्हें भला आदमी कहा, लेकिन बाद में लेखक हिसाब रखने लगे और महीने के अंत में दूकानदार से हिसाब पूछा। पता चला कि दूकानदार हर महीने 10 रुपया बढ़ाकर वसूल किया है। अर्थात् दूकानदार से भले आदमी का प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए हर साल 120 रुपये देना है। यदि 30 साल सामान खरीदता रहे तो लगभग साढ़े तीन हज़ार देना पड़ेगा।

(4)

'स्वच्छता अभियान' आधिकारिक रूप में सन् 1999 से चल रहा है। पहले इसका नाम 'ग्रामीण स्वच्छता अभियान' था। लेकिन 1 अप्रैल, 2001 के दिन तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने इस योजना में परिवर्धन करके, इसका नाम 'निर्मल भारत अभियान' रखा और बाद में सरकार ने इसका संशोधन करके 'पूर्ण स्वच्छता अभियान' कर दिया था। 24 सितंबर, 2014 को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 'स्वच्छ भारत अभियान' की मंजूरी दी। स्वच्छता अभियान का उद्घाटन माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्तूबर, 2014 को महात्मा गांधीजी

की 145 वीं जयंती के सुअवसर पर किया था। गांधीजी का सपना था कि हमारा देश भी विश्व के अन्य कई देशों की तरह पूरी तरह से स्वच्छ और निर्मल दिखाई दें। इस बात को ध्यान में रखकर प्रधान मंत्री जी ने गाँधी जयंती के अवसर पर इस अभियान की शुरुआत दिल्ली के राजघाट से की थी।

शीर्षक : स्वच्छता अभियान

मूल शब्द : 85 **प्रयुक्त शब्द : 46**

भारत में स्वच्छता अभियान 1999 में शुरू हुआ। 1 अप्रैल 2001 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने इसका नाम 'निर्मल भारत अभियान' रखा। बाद में 2 अक्तूबर 2014, को महात्मा गाँधी की 145वीं जयंती पर 'स्वच्छता अभियान' नाम से माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से, दिल्ली के राजघाट में उद्घाटित किया गया। यह अभियान गाँधीजी के स्वच्छता संबंधी सपने को साकार करता है।

(5)

यूनिकोड को समझने से पहले यह जानना जरूरी है कि कंप्यूटर कार्य कैसे करता है? जब हम कंप्यूटर के की-बोर्ड पर कोई अक्षर, उदाहरण के लिए "A', दबाते हैं तो हमें तत्काल स्क्रीन पर A दिखाई देता है, पर हम शायद यह नहीं जानते हैं कि कंप्यूटर ने इसे A के रूप में नहीं बल्कि ज़ीरो (0) और वन (1) के कुछ कांबिनेशन (मिश्रण) में सुरक्षित (save) किया है, क्योंकि कंप्यूटर का हर कार्य केवल ज़ीरो और वन से ही होता है। हर अक्षर और हर संकेत कंप्यूटर में 'ज़ीरो' (0) और 'वन' (1) के आधार पर ही मुद्रित होते हैं। कंप्यूटर में पहले पहल रोमन वर्णमाला का प्रयोग हुआ था, इसलिए अंग्रेजी के अक्षरों के लिए कोड बनाए गए। बाद में युरोपीय भाषाओं और चीनी, जापानी आदि भाषाओं के लिए भी कोड तैयार हुए। पर, इसके साथ ही यह बात सामने आई कि किसी एक भाषा के लिए तैयार कोड दूसरे कंप्यूटर पर कार्य नहीं करते हैं। तब यह निर्णय किया गया कि ऐसे कोड बनाने चाहिए जो वैश्विक रूप से एक समान हों। यह निर्णय ही यूनिकोड तैयार करने का आधार बना।

शीर्षक : यूनिकोड़

मूल शब्द : 129 **प्रयुक्त शब्द : 48**

यूनिकोड के अंतर्गत विश्व की सभी भाषाओं के सभी वर्णों और संकेतों को एक विशिष्ट संख्या प्राप्त हो जाने से विश्व की किसी भी भाषा का कंप्यूटर पर यह संभव है। प्रत्येक अक्षर को सूचित करने के लिए 4 बाइट्स का प्रयोग किया गया है। यूनिकोड की सहायता से ही मोबाइल, सोशल मीडिया और इंटरनेट में भारतीय भाषाओं का प्रयोग संभव हुआ।

(6)

'शिक्षा' बहुत व्यापक शब्द है। उसमें सीखने योग्य अनेक विषयों का समावेश हो सकता है। पढ़ना-लिखना भी उसी के अंतर्गत है। इस देश की वर्तमान शिक्षा प्रणाली अच्छी नहीं। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए, खुद पढ़ने-लिखने को दोष न देना चाहिए। लड़कों ही की शिक्षा-प्रणाली कौन-सी बड़ी अच्छी है। प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी

है कि सारे स्कूल और कॉलिज बंद कर दिए जाएँ? आप खुशी से लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा की प्रणाली का संशोधन कीजिए। उन्हें क्या पढ़ाना चाहिए, कितना पढ़ाना चाहिए, किस तरह की शिक्षा देनी चाहिए और कहाँ पर देना चाहिए घर में या स्कूल में इन सब बातों पर बहस कीजिए, विचार कीजिए, जी में आवे सो कीजिए: पर परमेश्वर के लिए यह न कहिए कि स्वयं पढ़ने-लिखने में कोई दोष है-वह अनर्थकर है, वह अभिमान का उत्पादक है, वह गृह-सुख का नाश करने वाला है। ऐसा कहना सोलहों आने मिथ्या है।

शीर्षक : स्त्री शिक्षा

मूल शब्द : 123 **प्रयुक्त शब्द : 48**

शिक्षा में पढ़ने-लिखने के साथ सीखने योग्य अनेक विषय समाविष्ट है। जो स्त्री शिक्षा को अनर्थ कार्य समझते हैं उन्हें वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संशोधन करने की व्यवस्था करनी चाहिए। क्योंकि प्रणाली में कमी होने के कारण शिक्षा संस्थानों को कोई बंद नहीं करता। स्त्री शिक्षा को ही अनर्थ कहना संपूर्ण रूप में मिथ्या है।

(7)

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने आफिस में समय से पहुँचना था। कलकत्ता से मन ऊब गया। फिर भी चलते-चलते एक बार उस बाग को देखने की इच्छा हुई। साथ ही साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता, तो और भी... मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्द लौट आना था। दस बज चुके थे। मैंने देखा कि उस साफ़ धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी, भालू मनाने चला था, ब्याह की तैयारी थी, पर सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षण-भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा– 'आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?'

शीर्षक : छोटा जादूगर

मूल शब्द : 132 **प्रयुक्त शब्द : 53**

बडे दिन की छुट्टी समाप्त होने के बाद लेखक आफीस जाने लगे। जाते-जाते वे जादूगर को देखने गये। वहाँ जादूगर तमाशा दिखा रहा था। उसके मुँह में प्रसन्नता नहीं थी। वह स्वयं मन ही मन रो रहा था। खेल समाप्त होने पर जब उसने लेखक को देखा तब लेखक ने उसकी पीठ थपथपाते हुए उसकी हालत के बारे में पूछा।

(8)

उसी बीच आनंद भवन में बापू आए। हम लोग तब अपने जेब-खर्च में से हमेशा एक-एक, दो-दो आने देश के लिए बचाते थे और जब बापू आते थे तो वह पैसा उन्हें दे देते थे। उस दिन जब बापू के पास मैं गई तो अपना

कटोरा भी लेती गई। मैंने निकालकर बापू को दिखाया। मैंने कहा, 'कविता सुनाने पर मुझको यह कटोरा मिला है।' कहने लगे, 'अच्छा, दिखा तो मुझको।' मैंने कटोरा उनकी ओर बढ़ा दिया तो उसे हाथ में लेकर बोले, 'तू देती है इसे?' अब मैं क्या कहती? मैंने दे दिया और लौट आई। दुख यह हुआ कि कटोरा लेकर कहते, कविता क्या है? पर कविता सुनाने को उन्होंने नहीं कहा। लौटकर अब मैंने सुभद्रा जी से कहा कि कटोरा तो चला गया। सुभद्रा जी ने कहा, 'और जाओ दिखाने!' फिर बोलीं, 'देखो भाई, खीर तो तुमको बनानी होगी। अब तुम चाहे पीतल की कटोरी में खिलाओ, चाहे फूल के कटोरे में- फिर भी मुझे मन ही मन प्रसन्नता हो रही थी कि पुरस्कार में मिला अपना कटोरा मैंने बापू को दे दिया।

शीर्षक : चाँदी का कटोरा

मूल शब्द : 136 **प्रयुक्त शब्द : 61**

बापूजी जब आनंद भवन आते थे तब लेखिका और उनकी सहेली अपने बचत उन्हें देश सेवा के लिए देती थीं। इस क्रम में एक बार जब बापूजी आये तब लेखिका ने कविता स्पर्धा में प्राप्त अपने पुरस्कार चांदी का कटोरा उन्हें दे दिया। यह जानकर सुभद्रा जी ने हंसी मजाक में कहा कि जो भी हो किसी भी कटोरा में खीर खिलाने से लेखिका बच नहीं सकती।

(9)

संयोग की बात, झूरी ने एक बार गोईं को ससुराल भेज दिया। बैलों को क्या मालूम, वे क्यों भेजे जा रहे हैं। समझे, मालिक ने हमें बेच दिया। अपना यों बेचा जाना उन्हें ना सीख जाते तो शायद अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने, पर झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाएँ-बाएँ भागते, पगहिया पकड़कर आगे से खींचता, तो दोनों पीछे को ज़ोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे करके हुँकारते। अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते-तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी।

शीर्षक : दो बैलों की कथा

मूल शब्द : 88 **प्रयुक्त शब्द : 44**

झूरी ने एक बार गोईं को अपना ससुराल भेजा। बैलों ने समझा कि मालिक ने उन्हें बेच दिया। गया को दोनों बैलों को घर तक ले जाने से बहुत कठिनाई हुई। अगर उन्हें भगवान वाणी दी होती तो वे झूरी से पूछते हमें क्यों निकाल रहे हैं, तुम्हारी सेवा में क्या कसर हमने रखा।

(10)

इस समय हमारे सामने गंभीर प्रश्न यह था कि क्या करना चाहिए? युद्ध क्षेत्र में डटे रहें या हट जाएँ? सोच विचार के बाद यही निश्चय हुआ कि यह लोहे का घोड़ा है। इसके सामने हम क्या चीज हैं। बड़े-बड़े वीर योद्धा भी ठहर नही सकते। इसलिए हमने साइकिल छोड़ दी और भगोड़े सिपाही बनकर मुड़ गए। पर दूसरे ही क्षण साइकिल पूरे जोर से हमारे पांव पर गिर गई और हमारी रामदुहाई बाजार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गूंजने लगी। उस्ताद लस्सी छोड़कर दौड़े आए और अन्य दयावान लोग भी जमा हो गए। सबने मिलकर हमारा पांव साइकिल से निकाला। भगवान के एक भक्त ने जंबक का डिब्बा भी उठाकर हमारे हाथ में दे दिया। दूसरे ने हमारी बगलों में हाथ डालकर हमें उठाया और सहानुभूति से पूछा, 'चोट तो नहीं आई? ज़रा दो चार कदम चलिए नहीं तो लहू जम जाएगा'। इस तरह दूसरे दिन भी हम और हमारी साइकिल दोनों अपनी घर से थोड़ी दूर पर जख्मी हो गए। हम लंगड़ाते हुए घर लौट आए और साइकिल ठीक होने के लिए मिस्त्री के दुकान पर भेज दी।

शीर्षक : साइकिल की सवारी

मूल शब्द : 115 **प्रयुक्त शब्द : 51**

लेखक अपने साइकिल सीखने के अनुभव के बारे में बताते हैं। एक दिन लेखक ने उस्ताद की अनुपस्थिति में स्वयं साइकिल चलाने की कोशिश की। ऐसे में अचानक साइकिल लेखक के पाँव पर गिर गई और वे चिल्लाने लगे। सब लोग इकट्ठा हुए और लेखक की सहायता की। लेखक घर पहुँचे और साइकिल की मरम्मत करने के लिए, उसे मिस्त्री की दूकान भेज दिया।

❊ ❊ ❊ ❊

V. अनुवाद अभ्यास

प्रांतीय भाषा में अनुवाद कीजिए :-

(1)

कठिन परिश्रम ही सफ़लता की चाबी है–पुरानी परंतु सच्ची कहावत है जो अनेक पीढ़ियों तक चलती रहेगी। बहुत से लोग कठिन परिश्रम से भागते हैं और अपने निकम्मेपन को बेकार के विचारों से छिपाने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए वे जीवन की विपन्नता और असफलता के लिए भाग्य को जिम्मेदार मानते हैं और पूर्ण रूप से खाली बैठने के लिए झूठे बहाने गढ़ते हैं।

यदि भाग्य की भूमिका को स्वीकारा भी जाए तो भी यह अपने कर्म को करने से रोकने की इज़ाजद नहीं देता। प्लेट में रखा खाना भी हाथ और मुँह को हिलाये बिना नहीं खाया जा सकता। सफलता कठिन परिश्रम करने के लिए और नई ऊँचाइयों को छूने के लिए उत्साहित करती है। हालांकि असफलताएँ भी आती हैं लेकिन उन्हें एक हारे हुए व्यक्ति की भावना से नहीं लेना चाहिए।

(2)

यदि ईश्वर कहे कि 'ले मैं तुम्हें आज़ाद कर देता हूँ, तुम्हारे सब दुःखों और कष्टों को दूर किये देता हूँ, पर इसके बदले में महात्मा जी जैसों का जन्म लेना बन्द कर देना चाहता हूँ तो मैं कहूँगा– मैं गुलामी से ज़रूर ऊब गया हूँ, आज़ादी का ज़रूर भूखा हूँ, देश की दुर्दशा मुझे बिच्छू की तरह डस रही है, उसके लिए मुझसे बड़ी कीमत लीजिए– महात्मा जी जैसे तक की आहुति लेना हो तो ले लीजिए– पर उनका आना मत रोकिए।'

यदि गुलामी, आपत्ति की यातना में ही ऐसों का जन्म होता हो, तो मैं आगे बढ़कर उस गुलामी और विपत्ति के चरण चूमूँगा। वह स्वराज्य बेकार है, जिसमें पवित्र विभूति न हो, उसके लिए स्थान न हो; वह पराधीनता, वह नरक, स्वर्ग और अपवर्ग से भी बढ़कर है, जिसमें पवित्र विभूतियों का दर्शन होता हो।

(3)

खाद्य पदार्थों में मिलावट एक अक्षम्य धोखा है जो एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्तियों के साथ किया जाता है। ज़्यादा से ज़्यादा पैसा कमाने के लिए लोगों के जीवन से खेलना क्रूरता है। मूलतः अनचाहे पदार्थ जैसे – धूल, अशुद्धियाँ, पत्थर के कणों आदि को खाने के सामान में मिलाना जो उसके रंग, आकार और रूप बनावट आदि से मिलते हों, मिलावट कहा जाता है।

इसके विशेष उदाहरण है दूध, मसाले, तेल और घी, दालें इत्यादि। यह न केवल लोगों से पैसा छीनने के समान है बल्कि उन्हें जहरीले और हानिकारक खादय पदार्थ देकर, उन्हें मूर्ख बनाना भी है। लोगों के जीवन के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। खाद्य सामग्री खरीदते समय हमें बहुत सावधान रहना चाहिए।

(4)

समय जाते देर नहीं लगती। पन्द्रह वर्ष बीत चुके, पर जान पड़ता है कि अभी कल की बात है। सन् 1916 में मैं तीसरी बार इन्ट्रेंस की परीक्षा देने बैठा था। दो साल मैं लगातार फेल हो चुका था। और अन्य विषयों में ज्यों-त्यों पास भी हो जाता, पर गणित का विषय मुझे अन्त में ले डुबाता। छोटे दर्जों में भी इसने मेरे रास्ते में रोड़े अटकाये, परीक्षाओं में इसने मेरे साथ सदा अड़ंगा नीति से काम लिया, पर मैं किसी-न-किसी करवट से दर्जा बराबर चढ़ता ही गया। इन्ट्रेन्स में पहुँचना था कि यह मेरा पीछा करता रहा।

लोगों का ऐसा खयाल था और अब भी है कि प्रतिभा नाम की चीज़ मेरे पल्ले पक्ष में कभी नहीं थी, पर मैं इसे मानने के लिए तैयार नहीं हूँ।

(5)

विदेशों में जाने के प्रति उत्साह बढ़ता ही जा रहा है और दूसरे अनेक देशों में भारतीयों पर हुए हमलों के बावजूद इसमें ज़रा कमी नहीं आयी है। कुछ लोग जल्दी पैसे कमाने के लिए जाते हैं और कुछ बेहतर जीवन जीने के लिए। अधिकतर भारतीय जो अच्छी तरह पढ़े लिखे नहीं है वे निम्न श्रेणी की नौकरियों जैसे बेरर, ड्राइवर और दूसरे मज़दूरी के कामों के लिए जाते हैं। वहाँ उनके साथ प्रायः बहुत अपमानजनक व्यवहार किया जाता है।

भारत बुद्धिजीवियों का देश है। हमारे सभी योग्य डॉक्टर, इंजिनियर, एमबीए आदि को विदेशों में अच्छी नौकरी मिल जाती है। कोई भी आसानी से सोच सकता है कि यदि भारत की यही मानवशक्ति भारत की उन्नति के लिए काम करे तो अपार सफलता प्राप्त होगी। हमें अपनी खुद की चाहतों को तिलांजलि देने का और सबसे पहले देश के नागरिकों की तरह सोचने और काम करने का अब समय आ गया है।

(6)

शाहज़ादी जहाँनारा तपस्विनी हो गयी है। उसके हृदय में वह स्वाभाविक तेज अब नहीं है, किन्तु एक स्वर्गीय तेज से वह कांतिमयी थी। उसकी उदारता पहले से भी बढ़ गयी। दीन और दुखी के साथ उसकी ऐसी सहानुभूति थी कि लोग उसे 'करुणा मूर्ति' मानते थे। उसकी इस चाल से पाषाण-हृदय औरंगज़ेब भी विचलित हुआ। उसकी स्वतंत्रता का उपभोग करने के लिए उसे अवकाश ही कहाँ था? पिता की सेवा और दुखियों के प्रति सहानुभूति करने से उसे समय बचा ही नहीं था।

जिसकी सेवा के लिए सैकड़ों दासियाँ हाथ जोड़कर खड़ी रहती थीं, वह स्वयं दासी की तरह अपने पिता की सेवा करती हुई अपना जीवन व्यतीत करने लगी। वृद्ध शाहजहाँ के इंगित करने पर उसे उठाकर बैठाती और सहारा देकर कभी-कभी यमुना के तट तक उसे ले जाती और उसका मनोरंजन करती हुई छाया-सी बनी रहती।

(7)

भारत में प्राचीनकाल से ही स्त्रियों को समाज में बहुत ही सम्मानित स्थान दिया जाता है। भारतीय समाज में स्त्रियों को देवी लक्ष्मी का स्वरूप प्रदान किया गया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वे विमान विद्‌या, अंतरिक्ष, राजनीति, बैंक, स्कूल, खेल-कूद, व्यापार, सेना, पुलिस आदि क्षेत्रों में स्त्रियों को काम करते हुए हम देख सकते हैं।

यह सब हम अपनी आँखों से प्रत्यक्ष रूप में देखते हैं यद्यपि पर्दे के पीछे हम पाएँगे कि स्त्रियाँ घरों में, कार्यालयों में, गलियों में अपराध होने का शिकार हैं। स्त्रियाँ बलात्कार, तेजाबी आक्रमण आदि झेल रही हैं। यह देखने से स्त्रियों की सुरक्षा संदेह के घेरे में है। हमें इन सब बुराइयों से उनके जीवन को सुरक्षित बनाना चाहिए।

(8)

बौद्ध काल में सबसे बड़ा विश्वविद्यालय नालंदा में था। यह स्थान मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह से सात मील दूर उत्तर की ओर, और पटना से चौबीस मील दक्षिण की ओर था। आजकल इस जगह पर 'बार गाँव' नामक गाँव बसा हुआ है जो गया जिले में है। नालंदा की प्राचीन इमारतों के खण्डहर यहाँ अभी तक पाये जाते हैं। सातवीं शताब्दी के प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसाँग ने नालंदा की शान व शौकत का बड़ा ही मनोहर वृत्तान्त लिखा है।

चीन ही में उसने नालंदा का हाल सुना था। इधर-उधर घूमते-घूमते जब वह गया पहुँचा, तब विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने उसे नालन्दा में आने के लिए निमंत्रण दिया। इससे उसने अपने को धन्य समझा। नालंदा में पहुँचते ही उसके सिर पर ऐसा असर पड़ा कि वह तुरन्त विद्यार्थियों में शामिल हो गया।

(9)

इंटरनेट सभ्यता पृथ्वी पर वरदान और अभिशाप दोनों के साथ उभरी है। लग रहा है कि सारी दुनिया कंप्यूटर के पर्दे पर सिमट गयी है। परंतु जिस प्रकार हर चीज़ के सकारात्मक और नकारात्मक पहलू होते हैं, इंटरनेट सभ्यता ने भी कुछ गलत पहलुओं को बढ़ावा दिया है। यह एक व्यक्ति को एक क्षण में ही बेइज़्जत करके उसकी जिंदगी को बर्बाद कर सकता है।

इंटरनेट हैकिंग उन सभी बैंक खातों, व्यक्तिगत सूचनाओं, डाटा और गुप्त विवरणों के लिए एक बड़ा खतरा है जो कंप्यूटर में संग्रहीत है। बच्चे इंटरनेट के उन्माद हो गये हैं। प्ले स्टेशन्ज़ और अश्लील वीडियोज़ उनके जीवन को बर्बाद करने के कगार पर हैं। अतः इसका प्रयोग नकारात्मक उद्देश्यों की बजाय सकारात्मक उद्देश्यों के लिए होना चाहिए।

(10)

एक बागी गुलाम और एक बादशाह की बातचीत हुई। यह गुलाम कैदी दिल से आज़ाद था। बादशाह ने कहा– मैं तुमको अभी जान से मार डालूँगा। तुम क्या कर सकते हो? गुलाम बोला– "हाँ, मैं फाँसी

पर चढ़ जाऊँगा; पर तुम्हारा तिरस्कार तब भी कर सकता हूँ।" बस, इस गुलाम ने दुनिया के बादशाहों के बल की हद दिखला दी। बस, इतने ही ज़ोर और इतनी ही शेखी पर ये झूठे राजा शरीर को दुःख देते और मार-पीटकर अनजान लोगों को डराते हैं। भोले लोग उनसे डरते रहते हैं।

चूँकि सब लोग शरीर को अपने जीवन का केन्द्र समझते हैं; इसीलिए जहाँ किसी ने उनके शरीर पर ज़रा ज़ोर से हाथ लगाया वहीं वे डर के मारे अधमरे हो जाते हैं; केवल शरीर-रक्षा के निमित्त ये लोग इन राजाओं की ऊपरी मन से पूजा करते हैं। यथा राजा तथा प्रजा। जिनका बल शरीर को ज़रा-सी रस्सी से लटकाकर मार देने भर का ही है भला, उनका और उन बलवान सच्चे राजाओं का क्या मुकाबला जिनका सिंहासन लोगों के हृदय-कमल की पंखुड़ियों पर है? सच्चे राजा अपने प्रेम के ज़ोर से लोगों के दिलों को सदा के लिए बाँध देते हैं। दिलों पर हुकूमत करनेवाले, फ़ौज़, तोप, बन्दूक आदि के बिना ही शाहंशाह जमाना होते हैं। मंसूर ने अपनी मौज़ में आकर कहा– "मैं खुश हूँ।" दुनिया के बादशाह ने कहा– "यह काफ़िर है।" मगर मंसूर ने अपने कलाम को बन्द न किया।

(11)

वनस्पति और प्राणी समूह लुप्त होने के कगार पर है। बढ़ती हुई जनसंख्या की ज़रूरतों के लिए वनों का उन्मूलन बहुत अधिक बढ़ गया है। बर्बाद हुए जंगलों ने पूरी खाद्य शृंखला को बाधित कर दिया है जिसमें जानवर भी शिकार/बाधित हुए हैं। विभिन्न उद्देश्यों के लिए जानवरों का शिकार करने से भी उनकी संख्या कम हो गयी है।

जानवरों को उनके प्राकृतिक आवास से दूर रखने के कारण उनकी जीवित रहने की दर कम हो रही है। वनीकरण जनसंख्या की वृद्धि को रोकने का उत्तम उपाय है। इससे प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग को भी कम किया जा सकता है। इन उपायों का पालन करके भावी पीढ़ी को एक समृद्ध भविष्य प्रदान किया जा सकता है।

(12)

मकदूनिया का बादशाह डेमेट्रियस कभी-कभी राज्य का सब काम छोड़ अपने ही मेल के दस-पाँच साथियों को लेकर विषय-वासना में लिप्त रहा करता था। एक बार बीमारी का बहाना करके इसी प्रकार वह अपने दिन काट रहा था। इसी बीच उसके पिता उससे मिलने गए और उसने एक हँसमुख जवान को कोठरी के भीतर से बाहर निकलते देखा। जब पिता कोठरी के भीतर पहुँचा तब डेमोट्रियस ने कहा, "ज्वर ने मुझे अभी छोड़ा है।" पिता ने कहा, "हाँ ठीक है, वह दरवाज़े पर मुझे मिला था।"

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्बुद्धि का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी जो उसे दिन-ब-दिन अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देनेवाली बाहु के समान होगी जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाती जाएगी।

❀ ❀ ❀ ❀

ധനവും ബലവും വിദ്യയുമുങ്കിൽ പോലും വിനയം പ്രകടിപ്പിച്ചാൽ അവനെആരും ഭീരു എന്ന് പറയില്ല. ഭയം മൂലം ഉള്ള വിനയം ആത്മാവിനെവിഴ്ത്തുന്നു. എന്നാൽ സ്നേഹവും അഹങ്കാരമില്ലാത്ത വിനയവും ആത്മാവിനെഅഭിവൃദ്ധിപ്പെടുത്തുന്നു.

❊ ❊ ❊ ❊

(अंग्रेज़ी)

(1)

Now-a-days bottled water is available under different brand names at every place. Every brand lavishly claims about its nutritional qualities. It is available not only in small bottles of one or two litres but also in big jars of 20 or 25 litres. Usually, people consider it safe drinking water.

But the question is, how safe is this bottled water for drinking? Most mineral water companies in India just pump water from tubewell or borewell which they see is conveniently located. Apart from this most of the bottled water in India is bottled in PVC bottles which is generally unfit for drinking.

(2)

Come, Let us forget the incidents of worry and fear and keep going forward and let us feel grateful to the Almighty that we are born in the same country in which great people like Mahatmaji were born; we lived in those days and even had his Darshan, read his writings, heard his sermons and even had the pride of becoming one of his soldiers, at least as ordinary followers. By seeing his devoted life, we had the courage of becoming bold like him.

What is the life of Mahatmaji? It is the message of Hope, Eternity and Soul; an example of Life, Awakening and Sacrifice. The Lap of Eternity is created only for such lives and is wide open. Oh Man! Do not be afraid of the fearfulness of Death. In it there is the light of eternity shining bright.

(3)

'Make in India' campaign is a new plan launched by the Prime Minister of India, Narendra Modi, to give foreign investors a chance to invest in India in number of business. It is an iniative campaign run by the Govt. of India to cheer up multinational companies as well as domestic companies at National and International level in order to manufacture products in India. It is a Praiseworthy effort made by the Prime Minister for employment on 25th September 2014 at the Vigyan Bhavan in New Delhi.

(4)

I had a watch in my pocket. I took it out. It showed 12 o' clock. I changed it to 3 o' clock and slowly kept turning its hands and watched the position of the hands till it struck 7 o' clock. Thus I solved four questions out of six. Of course, I was not having moustaches at that time, and felt victory by pinching there, (as gesture of victory), returned home.

Results of the examination were out after two months. The world saw that I came out successful in it. People were wondering and amazed. Someone started telling, "It is like a treasure in the hands of a blind man", and somebody considered this as "Collecting grass from the rocks". Even Atheists started believing God. I patted myself and said to myself : "Long live!. Let everyone get their due, the way I got my kingdom back."

(5)

Nowadays, corruption is soaring high in every sphere of society. Everyday a new scandal unfolds and makes a news in the newspaper. But the respected names associated with the same make wrong use of their power and the cases gets closed before the accused is proved guilty.

Corruption is basically the degradation of moral values in human beings which ultimately has ruined the society we live in. Wealth seems to have become their only motto in life and they are ready to sell their souls for it. The restore of old values, a big no to all the ways of achieving quick success and giving a chance to real talent can help eradicate this burning issue.

(6)

Nowadays, all Universities in the world, collect fees from the students. But, University of Nalanda was totally different from this. Not only it was not collecting fees from its students, but every necessary thing of the students was given free of cost. i.e. food, clothing, medicine, accommodation etc. were available free of cost. This tradition has been there in India from the very ancient days.

Villages, Land, paddy fields, gardens or cash was being donated by the natives, to these Universities. The entire expenses were borne out of these things. Like this, a lot of time, which is likely to be spent by the students on procuring money for their food etc., is saved and they spend this time and energy on their studies. As a result of that, eminent scholars of serious thinking were coming or came out of these vidyalayas. Buddhism, Sanskrit– literature and the entire world was benefitted.

(7)

'Beti Bachao Beti Padao' is a Govt. social scheme launched by the Prime Minister Narendra Modi in order to address the gender imbalance and discrimination against girl child in the Indian society. This scheme was launched by the Prime Minister on 22^{nd} of January in 2015 at Panipet, Haryana.

This scheme is to make aware the people about the importance of girls in the society. It is to increase awareness among common people to save the lives of girl child by completely removing the female foeticide. People should celebrate the birth of their girl child and educate them with full responsibility as they do for their boy child.

(8)

Hero's heart becomes the heart of all. His mind becomes the mind of all. His thoughts become thoughts of all. Everybody's resolves become his resolves. His strength becomes the strength of all. He belongs to all and everybody belongs to him. Heroes are not made in factories. They are born themselves like great Deodar trees in the forest of life.

And without being provided water or milk or even without being touched by anyone they prepare themselves. All on a sudden they appear on the stage of the world. Their entire life will be inside only. It will not surface outside, like the fields above the Diamond mines. Very rarely the life of a hero appears outside. Its nature is to keep hidden.

(9)

Role of newspapers has always been of great importance, not only in India but also in other countries. Every newspaper tries to establish its indentity and wins the loyalty of its readers. It is done through the presentation of its material or news coverage. Newspaper contain public grievances and reflect public opinion.

It is through newspapers that the policies and actions of the government are conveyed to the people. In return people give their opinion, they praise or criticise them. Newspapers are the watch dog of human rights. They keep the Public aware of what right or wrong goes on in the society. They can make or break the governments.

(10)

The education we get from schools and colleges, is nothing comparing to the lessons we learn about "Self-reliance", from the artisans like farmers, shopkeepers, carpenters, Blacksmiths etc. This education is not available in books, but can be seen when we look at the character, sacrifice, steadfastness, courage, labour and hard work of every individual.

The success of our lives lies in these qualities. These qualities are the end of the progress of mankind and what we do in this life is its essence.

(11)

India is known for its spiritual and ethical values from the time immemorial. Spiritualism is the life line of Indian culture. The most ancient book on religion "The Rigveda' belongs to India. The most perfet science of physical, mental and spiritual health "The Yoga" belongs to India.

Indian History is full of such episode when people not only renounced their property and family but also their lives to keep their words and ideals. Universal brotherhood motherhood in earth, work is worship are a few of those innumerable principles that signify the spiritual and ethical values in the society of ancient India.

(12)

Saint Bhrugu had kicked on the chest of Lord Maha Vishnu. Then Lord asked him, "Sir! Is your foot hurt?" What an excellent example for humility! Humility is not only necessary for Etiquette, but it purifies the soul too! A humble person will always be far from the evil of pride. His humbleness creates love in others and he experiences total peace within himself.

In spite of being wealthy, strong and educated, a person who shows humbleness will not be called timid person. Humility out of fear will reduce the quality of the soul and humility with love and without pride will elevate the soul.

❋ ❋ ❋ ❋

ചീത്തക്കൂട്ടു കെട്ടിന്റെ ജ്വരം ഏറ്റവും ഭയാനകമാണ്. അത് നീതിയെയും സദ്വ്യക്തിയെയും മാത്രമല്ല നശിപ്പിക്കുന്നത് വൃദ്ധിയേയും ക്ഷയിപ്പിക്കും. ചെറുപ്പക്കാരുടെ കൂട്ടുകെട്ട് മോശമാണെങ്കിൽ അത് അവന്റെ കാലുകളിൽ കെട്ടിയ തിരികല്ല് പോലെ അവനെ ദിവസംതോറും അധഃപതനത്തിന്റെ കുഴിയിൽ വിഴ്ത്തുകയും, നല്ലതാണെങ്കിൽ അവനെ നിരന്തരം ഉന്നതിയിലേക്ക് ഉയർത്തിക്കൊണ്ടുപോകാൻ സഹായിക്കുന്ന കൈകൾ പോലെ ആയിരിക്കുകയും ചെയ്യും.

(अंग्रेज़ी)

(1)

"Hard work is the key to success" is an old but true saying which will remain valid till the endless generations to come. Many people escape from hard work and try to veil their laziness under the myths of futile thought. For example they base their tattered position of life and failure on destiny and turn to take a lame excuse for sitting completely idle.

Even if the role of destiny is admitted it does not entitle anybody to stop doing his part of 'Karma'. The food on plate cannot be eaten without the movements of hand and mouth. Success encourages to work harder and discover new heights. However, failures also come but they must not be taken with the spirit of a loser.

(2)

If God tells me, "Look! I will let you free, I will relieve you from all miseries and hardships; but in return I want to stop the births of great people like Mahatmaji; I shall say, "It is true that I am tired of this slavery and I am eager to become free, and the plight of our country pricks me like scorpion-bite, for that you may please take maximum value from me–If you have to take Aahuthi like Mahatmaji. Of course you can take; but please do not stop 'the coming' of them." If in "slavery" and in the hardships of calamities only, births of such great souls take place, then, I move forward to bend and prostate before the "slavery and distress". That freedom has no meaning in which there are no great souls and where there is no scope for it. That slavery and hell in which one can have darshans of great people are better than the heaven and the salvation.

(3)

Food adulteration is an obnoxious fraud done by a man with the other man. Playing with the lives of people for making more and more money is brutality. Basically the mixing of unwanted materials like dust, impurities, concrete particles etc., in any food item which matches its colour, size and texture is adulteration.

The typical examples of these are milk, spices, oil and ghee, pulses etc. Not only it is like snatching money from people but also a form of befooling them by giving them poisonous and harmful eatables. They are playing with the lives of people. We must be very careful while purchasing eatables.

(4)

Time passes away just like that. 15 years have gone, but it appears as though it happened yesterday. In the year 1916 I appeared for Entrance Examination for the third time.

I failed in the previous two consecutive examinations. Even though I was passing in other subjects, Mathematics was letting me down at the end. Even in the Lower classes this had been blocking my way. During examinations it had adopted a negative attitude. But I was, by hook or cook, climbing up to the next class. I had to appear for the Entrance Examination and this kept on chasing me.

People were of the opinion and still they are of the same opinion that "Talent" was never in my favour; but I am not prepared to accept this.

(5)

The craze of going to foreign is on and even the attacks on Indians in many of the foreign countries have not curbed this craze a bit. Some go for the sake of quick money and some for a better lifestyle. Most of the Indians who are not well educated go for lower level jobs, like waiters, drivers and other labour. They are often treated disgracefully there.

India is a Country of brains. All our talented Doctors, Engineers, MBAs etc., get good jobs in Foreign Countries. One can easily think that if the same manpower of India work for the progress of India itself success will be bound less. It is high time that we should put back our own desires and think and act as citizens of the country first.

(6)

Princess Jahanara became a saint. Now, she doesn't possess that natural glow. But she was glowing with a spiritual aura. Her campassion has grown much. She had such sympathy towards the poor and the helpless. People consider her as "Incarnation of compassion". By this attitude of her, stone hearted Aurangajeb was very unhappy. She had no time left to her after serving her father and after showing pity towards the distressed. She, who had hundreds of maid servants at her beck and call, herself started spending her life in serving her father like a servant. Just by the gestures of old Shah jahan, she assists him to sit and sometimes takes him to the banks of River Jamuna supporting him physically and takes care of him and stays with him like his shadow.

(7)

In India women are given most respected position in the society from the ancient time. They are given the position of Goddess Lakshmi in the Indian Society. Indian Women are found working in all fields like Aeronautics, Space, Politics, Banks, Schools, Sports, Business, Army, Police and in many more.

It is all that what we see with our open eyes however, if we see behind the curtain we will find all the crime against women at homes, Offices, streets etc. When we see these crimes against women in India such as rape cases, acid attacks, etc. the safety of women has been in doubt. We should make their life safe from all these evils.

(8)

Nalanda was the biggest University during Buddist days. This was situated at a distance of seven miles towards north from the Ancient Magadh Capital "Rajgarh" and twentyfour miles towards south from Patna. Now-a-days there is a village by name "Baar Gaanv", in the district of Gaya. Even now, the remains of old buildings of Nalanda are available. Famous chinese traveller Huen sang of seventh century had written a very beautiful history about the grandeur and greatness of Nalanda. Only in China, he heared about the greatness of Nalanda. Wandering here and there, when he reached there, the authorities of Nalanda have invited him to visit Nalanda. With this, he considered himself as a blessed person. Soon after reaching Nalanda he was so influenced that he joined the student fraternity.

(9)

The Internet culture has dawned on the globe together with its boon and doom. The whole world seems to have just fitted in a computer screen. But as everything has a positive as well as negative side, internet culture has promoted some wrong aspects too.

It can disrepute and destroy a person's life in a second. Internet hacking is a big danger to all the bank accounts, personal information in computers. Children are becoming internet maniac. Playstations and vulgar videos are on the way of ruining their life. So it must be used for constructive purposes rather than negative purposes.

(10)

There was a dialogue between a rebellious slave and a king. The slave was free by heart. The king said, "I shall kill you now itself. what can you do? "The slave replied, "Yes, I shall climb on to the gallows; but I can disregard you, yet." By this, the slave had shown the world the limit of power of the Emperors. Just by this jolt and shake, these false kings threaten by torturing and beating the innocent people. Innocent people live in fear of them. Since everybody think that the body is the centre, therefore as soon as somebody touches their body little forcefully, they become half-dead out of fear; just for the sake of protection to the body, these people worship kings thoughtlessly. So in this case, 'As is the king, So is his rule': when this power can only kill the body just by hanging with a small rope, Oh! what to say about those real strong kings whose throne is seated in the petals of the lotus hearts of people? Real Kings will, bind the people forever with the power of Love. Even without using the force like army, cannons and guns for day to day Governance, they become Emperors. Once Mansoor shouted in joy, "I am happy." The emperor of the Universe said, "He is a liar." But Mansoor did not stop his rhetoric.

(11)

The flora and fauna are on the verge of extinction. The deforestation for satisfying the needs of growing population has increased. The destroyed jungles have disturbed the whole food chain which has affected animals too. The hunting of animals for various purposes has minimised their number too.

The keeping of animals away from their natural habitats gives a hand in reducing their survival rate. Aforestation curb on human population. Intelligent and

minimal use of these natural resources etc., are some of the measures which must be strictly observed to give a prosperous and wealthy future to the next generations.

(12)

King Demetrius of Makdhoonia, sometimes, leaves all his work, used to spend his time in worldly pleasures, alongwith few of his lousy friends. Once, with the pretence of illness, he was spending his time like this. During one of these days, his father went to meet him. The father saw a laughing youth coming out of the room. As he entered the room, Demetrius said, "Fever has just now left me". Father replied, "Yes, you are right. He just met me outside the room."

The fever of bad company is more dangerous than any other thing. It will destroy not only the morality and good conduct, but also destroys the growth. If the company of any youth is bad, it will be like a grinding stone tied to the legs which will keep sinking him gradually in the ditch of downfall and if it is good, it will be like a helping hand which will keep lifting him up towards progress.

हिन्दी में अनुवाद :–

(1)

आजकल बोतल बंद पानी विभिन्न नामों से प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध है। प्रत्येक ब्राण्ड बढ़-चढ़कर इसके पौष्टिक तत्वों व गुणों का दावा करता है। यह सिर्फ 1 या 2 लीटरों की छोटी बोतलों में ही नहीं बल्कि 20 से 25 लीटर तक के बड़े डिब्बों में भी उपलब्ध है। अधिकांश- लोग इसे सुरक्षित पेयजल मानते हैं।

लेकिन प्रश्न यह उठता है कि पीने के लिए यह बोतल बंद पानी कितना सुरक्षित है? भारत में ज्यादातर खनिज़ जल की कंपनियाँ आसपास में जो भी ट्यूब वेल या बोरवेल सुविधाजनक रूप से उपलब्ध होता है, उसी पानी को प्रयोग में लाती हैं। इसके अलावा भारत में ज़्यादातर पानी PVC बोतलों में पैक किया जाता है। PVC बोतलें सामान्यतः पीने के पानी हेतु सुरक्षित नहीं हैं।

(2)

आइए, हम चिन्ता और आशंका की घटनाओं को छोड़कर अपने काम में आगे बढ़ते चलें और इसी बात पर परमात्मा का उपकार मानें कि हम महात्माजी जैसे विभूति के समय में उसी देश में जन्म हुए, रहे, दर्शन किये, उनके लेख पढ़े उपदेश सुने और स्वराज्य की सेना में– एक छोटे और मामूली क्यों न हों- उसके सिपाही बनने का गौरव प्राप्त किया। और महात्माजी के पुरुषार्थी जीवन को देखकर उनकी-सी विभूति बनने का हौसला रखें।

महात्माजी का जीवन क्या है? आशा, निरंतरता और आत्मा का संदेश है, जीवन, जागृति और बलिदान का नमूना है। ऐसे ही जीवन के लिए अमरता की गोद सर्जित और खुली है। ओ मनुष्य, तू मृत्यु की भयानकता से न सिहर। उसके अन्दर अमरता की ज्योति जगमगा रही है।

(3)

'Make in India' प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चलाया गया नया अभियान है जिससे विदेशी निवेशक भारत में अनेक व्यापारिक क्षेत्रों में निवेश कर सकें। भारत सरकार द्वारा चलाए जानेवाला यह लाभकारी अभियान है जिससे बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ तथा देश की राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तरवाली कंपनियाँ भारत में ही उत्पाद निर्मित कर सकें। प्रधानमंत्री द्वारा भारत में रोज़गार के अवसर प्रदान करने का यह सराहनीय प्रयास है। उन्होंने विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 25 सितंबर 2014 को इस अभियान का श्रीगणेश किया था।

(4)

मेरे जेब में घड़ी थी। उसे मैंने निकाला। उसमें बारह बजे थे। मैंने उसमें तीन बजा दिये और धीरे-धीरे सुई घुमाने लगा और देखने लगा कि दोनों सुइयाँ सात बजने तक कहाँ-कहाँ पर मिलती हैं। यों मैंने छः में चार सवाल कर लिये। मूँछें तो उस समय थीं नहीं, पर जहाँ होनी चाहिए वहाँ का चमड़ा ऐंठता हुआ मैं उस दिन मकान आया।

दो महीनों में परीक्षा का फल प्रकाशित हुआ। दुनियाँ ने देखा कि मैं पास हूँ। लोग आश्चर्य में डूबे, उतराये और उभचुभ हुए। किसी ने अंधे के हाथ बटेर की कहानी याद की। किसी ने पत्थर पर दूब जमाना स्वीकार किया। कई नास्तिकों ने ईश्वर को मान लिया। मैंने अपनी पीठ ठोंकी और कहा– जीते रहो। जैसा मेरा राज-पाट लौटा, वैसा ईश्वर करे सबका लौटे।

(5)

आजकल भ्रष्टाचार समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी चरम सीमा पर है। हर दिन एक नया घोटाला खुलता है और अख़बार की खबर बन जाती है। परन्तु उससे जुड़े बड़े लोग अपनी शक्तियों का गलत प्रयोग करते हैं और इलजाम लगाये गये व्यक्ति का दोष निरूपित होने से पहले ही मामला बंद किया जाता है।

भ्रष्टाचार मूलतः मनुष्यों में नैतिक मूल्यों का पतन है इसने अंततः उस समाज को खराब कर दिया है जिसमें हम रहते हैं। धन ही उनका एकमात्र उद्देश्य बन गया है और वे इसके लिए अपनी आत्मा तक बेचने को तैयार हो जाते हैं। पुरातन मूल्यों की पुनःस्थापना करके, अनायास विजय सफलता पाने के सभी रास्तों को न अपनाकर सच्चे प्रतिभावान व्यक्तियों को अवसर प्रदान कर इस भयंकर मुद्दे का उन्मूलन किया जा सकता है।

(6)

दुनिया में आजकल जितने विश्वविद्यालय हैं, सबमें विद्यार्थियों से शुल्क वसूल किया जाता है। पर नालंदा के विश्वविद्यालय की दशा ठीक इसके विपरीत थी। केवल यही नहीं कि विद्यार्थियों से कुछ नहीं लिया जाता था, अपितु उन्हें प्रत्येक आवश्यक वस्तु मुफ़्त में दी जाती थी। अर्थात् भोजन, वस्त्र, औषधि, निवास स्थान आदि सब कुछ सेंत-मेंत मिलता था। यह प्रथा हिन्दुस्तान में बहुत प्राचीन काल से चली आयी है।

लोग गाँव, खेत, बाग अथवा नकद रुपये इन विद्यालयों को दान करते थे। इसी से उनका सम्पूर्ण खर्च चलता था। इस प्रकार विद्यार्थियों का बहुत समय और शक्ति पेट पूजा के लिए धन पैदा करने में नष्ट होने से बचता था और वे इस समय और शक्ति को विद्याध्ययन में लगाते थे। इसका फल यह होता था कि गम्भीर विचारवाले मननशील विद्वान इन विद्यालयों से निकलते थे। इसीसे लोग बौद्ध धर्म, संस्कृत-साहित्य और संसार का अनन्त उपकार कर गये हैं।

(7)

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' एक सरकारी सामाजिक योजना है जो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रारंभ किया गया है। इसके माध्यम से लिंग भेद और भारतीय समाज में कन्याओं के साथ होनेवाले भेदभाव को दूर किया जा सकता है। यह योजना 22 जनवरी 2015 को हरियाणा के पानीपत में प्रधानमंत्री द्वारा प्रारंभ की गई।

यह योजना समाज में कन्याओं के महत्व को जानने के विषय में लोगों को सचेत करने के लिए बनी है। यह योजना सभी लोगों के हृदय में कन्या भ्रूण हत्या की भावना को जड़ से समाप्त करने के लिए तथा उन्हें सचेत करने के लिए प्रारंभ की गई है। लोग जिस प्रकार अपने पुत्र का जन्मोत्सव मनाते हैं उसी प्रकार अपनी बेटियों का जन्मोत्सव भी मनाना चाहिए तथा अपने पुत्र की भाँति पुत्रियों को भी शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।

(8)

वीर पुरुष का दिल सबका दिल हो जाता है। उसका मन सबका मन हो जाता है। उसके ख्याल सबके ख्याल हो जाते हैं। सबके संकल्प उसके संकल्प हो जाते हैं। उसका बल सबका बल हो जाता है। वह सबका और सब उसके हो जाते हैं।

वीर लोग कारखाने में बनाये नहीं जाते। कायम नहीं हो सकते। वे तो देवदार के दरख्तों की तरह जीवन के अरण्य में खुद-ब-खुद पैदा होते हैं। और बिना किसी के पानी दिये, बिना किसी के दूध पिलाये, बिना किसी के हाथ लगाये तैयार होते हैं। दुनिया के मैदान में अचानक ही सामने आकर वे खड़े हो जाते हैं। उनका सारा जीवन भीतर ही भीतर होता है। बाहर तो जवाहिरात की खानों की ऊपरी ज़मीन की तरह कुछ भी नज़र नहीं आता। वीर की ज़िन्दगी मुश्किल से कभी-कभी बाहर नज़र आती है। उसका स्वभाव तो छिपे रहने का है।

(9)

समाचार पत्रों की भूमिका न सिर्फ भारत में बल्कि दूसरे देशों में भी हमेशा बहुत महत्वपूर्ण रही है। प्रत्येक समाचार पत्र अपनी पहचान बनाने की कोशिश करता है और अपने पाठकों का विश्वास जीतता है। यह कार्य समाचार पत्र अपने समाचारों के प्रस्तुतीकरण व समाचार कवरेज के माध्यम से करते हैं। समाचार पत्र में लोगों की शिकायतें और उनके विचार शामिल होते हैं।

सरकार की नीतियाँ और उसके कार्य समाचार पत्रों के माध्यम से लोगों तक पहुँचते हैं। बदले में लोग अपने विचार, राय, प्रशंसा व आलोचना व्यक्त करते हैं। समाचार पत्र मानवाधिकारों के संरक्षक हैं। समाज में क्या गलत या सही हो रहा है उस सबके प्रति जनता को समाचार पत्र ही जागरूक करते हैं। वे सरकार बना सकते हैं और गिरा भी सकते हैं।

(10)

आत्म-निर्भरता के संबंध में जो शिक्षा हमें खेतिहर, दूकानदार, बढ़ई, लोहार आदि कारीगरों से मिलती है, उसके मुकाबले में स्कूल और कॉलेजों की शिक्षा कुछ नहीं है, और यह शिक्षा हमें पुस्तकों या किताबों से नहीं मिलती, वरन् एक-एक मनुष्य के चरित्र, आत्म-दमन, दृढ़ता, धैर्य, परिश्रम, स्थिर अध्यवसाय पर दृष्टि रखने से मिलती है।

इन सब गुणों पर हमारे जीवन की सफलता निर्भर है। ये गुण मनुष्य जाति की उन्नति के छोर हैं और हमें इस जीवन में क्या करना चाहिए, इसका सारांश हैं।

(11)

भारत शाश्वत काल से अपने आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों के लिए जाना जाता है। आध्यात्मवाद भारतीय संस्कृति की जीवनरेखा है। धर्म पर सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद भारत में ही रचा गया। शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक स्वास्थ्य का संपूर्ण विज्ञान योग भी भारत की ही देन है।

भारतीय इतिहास ऐसी घटनाओं से परिपूर्ण है, जहाँ लोगों ने संपत्ति व परिवार का ही नहीं बल्कि अपने जीवन का भी परित्याग कर दिया। विश्व बन्धुत्व, पृथ्वी में मातृत्व भाव, कर्म में पूजा का भाव उन असंख्य सिद्धान्तों में से कुछ हैं जो प्राचीन भारतीय समाज में प्रचलित आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों का महत्व प्रदर्शित करते हैं।

(12)

संत भृगुजी ने भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर लात मारी, तो भगवान पूछने लगे, "महाराज! आपके पैर में चोट तो नहीं आयी?" विनय का क्या उत्तम आदर्श है! विनय केवल शिष्टाचार के लिए ही आवश्यक नहीं है, वरन् इससे आत्मा की भी शुद्धि होती है। विनयशील मनुष्य अभिमान के दोष से दूर रहता है। नम्रभाव दूसरों में प्रेमभाव उत्पन्न करता है और वह अपने में अपूर्व शांति का अनुभव करता है।

धन, बल और विद्या के होते हुए भी जो विनय प्रकट करता है, उसको कोई कायर नहीं कह सकता। भयवश विनय आत्मा को गिराती है, किन्तु प्रेम और निरभिमानयुक्त विनय आत्मा का उत्थान करती है।

❀ ❀ ❀ ❀

प्रवेशिका–3

PRAVESHIKA–3

नया पाठ्यक्रम / NEW SYLLABUS

नमूना प्रश्न-पत्र

समय : 3 घंटे] **भाग-1** **[पूर्णांक : 100**

I. किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :- **15**

1. नागरिकों का कर्तव्य और मूल अधिकार
2. बेकारी की समस्या
3. पोंगल–मकर संक्रांति

II. अपने क्षेत्र के खाद्य एवं आपूर्ति अधिकारी को एक नया राशन कार्ड जारी करने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए :- **8**

(या)

विद्यालय के प्रयोगशाला में आपकी असावधानी से हुए नष्ट पर लगाये गये जुर्माने से माफ़ी माँगते हुए पत्र लिखिए।

III. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास में मानव संसाधन प्रबंधक (HR Manager) के पद के लिए अपना व्यक्तिवृत्त तैयार करें :- **7**

(या)

आप एम. सतीशकुमार हैं। बैंक आफ़ बडौदा, टी.नगर शाखा, चेन्नई में आपकी बचत खाता संख्या xxxxx123 है। आप आहरण पर्ची का इस्तेमाल करके (withdrawal form) का इस्तेमाल करके रु. 5000/- आहरण करें।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

यह फार्म चैक नहीं है।
कृपया पास-बुक के साथ प्रस्तुत करें।
This Form is not a cheque.
Pass Book must accompany this.

① बचत बैंक SAVING BANK

खाता नं./खाते क्र.
ACCOUNT NO.

② शाखा Branch ________ दिनांक/Date ________ ③

मुझे/Pay Self ④ ________

रुपये / Rupees ⑤ ________

________ अदा करे ₹ ⑥

हस्ताक्षर/सही/Signature ________ ⑦

खातेदार का नाम Name of the a/c holder ________ ⑧

नामांकन सुविधा उपलब्ध Nomination facility available ________

नकद अदा करे
PAY CASH

F-292
34000/12/2016NKE

IV. निम्नलिखित गद्यांश को संक्षेप में लिखिए :- **5**

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने आफिस में समय से पहुँचना था। कलकत्ता से मन ऊब गया। फिर भी चलते-चलते एक बार उस बाग को देखने की इच्छा हुई। साथ ही साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता, तो और भी... मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्द लौट आना था। दस बज चुके थे। मैंने देखा कि उस साफ़ धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी, भालू मनाने चला था, ब्याह की तैयारी थी, पर सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षण-भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा– 'आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?'

V. अपनीय प्रांतीय भाषा में अनुवाद कीजिए :- **5**

कठिन परिश्रम ही सफ़लता की चाबी है–पुरानी परंतु सच्ची कहावत है जो अनेक पीढ़ियों तक चलती रहेगी। बहुत से लोग कठिन परिश्रम से भागते हैं और अपने निकम्मेपन को बेकार के विचारों से छिपाने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए वे जीवन की विपन्नता और असफलता के लिए भाग्य को जिम्मेदार मानते हैं और पूर्ण रूप से खाली बैठने के लिए झूठे बहाने गढ़ते हैं।

VI. हिन्दी में अनुवाद कीजिए :- **10**

'Make in India' campaign is a news plan launched by the Prime Minister of India, Narendra Modi, to give foreign investors a chance to invest in India in number of business. It is an iniative campaign run by the Govt. of India to cheer up multinational companies as well as domestic companies at National and International level in order to manufacture products in India. It is a Praiseworthy effort made by the Prime Minister for employment on 25th September 2014 at the Vigyan Bhavan in New Delhi.

(अंग्रेज़ी)

"Make in India' பிரதம மந்திரி நரேந்திர மோதியால் நடைமுறைப்படுத்தப்பட்ட திட்டமிட்ட நடவடிக்கையாகும். இதன் மூலம் வெளிநாட்டு முதலீட்டாளர்கள் இந்தியாவில் பல வியாபாரத்துறைகளில் முதலீடு செய்ய ஏதுவாக இருக்கும். இதன் மூலம் பல வெளிநாட்டுக் கம்பெனிகள், உள்நாடு மற்றும் வெளி நாட்டுத் தொடர்புள்ள கம்பெனிகள் இந்தியாவில்தான் உற்பத்தியை பெருக்க முடியும். பிரதம மந்திரி மூலம் பாரதத்தில் தொழில் வளர்ச்சிக்கான இந்த சந்தர்ப்பம் அளிக்கப்பட்டுள்ளது. இது மெச்சத்தகுந்த முயற்சியாகும். புது தில்லி விஞ்ஞான பவனில், செப்டம்பர் 25, 2014 இல் இத்திட்டம் தொடங்கப்பட்டது.

(तमिल)

'మేక్ ఇన్ ఇండియా' ప్రచారం అనేది భారత ప్రధాని నరేంద్ర మోడీ ప్రారంభించిన వార్తా ప్రణాళిక. ఇది విదేశీ వ్యాపారస్తులకు భారతదేశంలో అనేక వ్యాపారాలలో పెట్టుబడులు పెట్టడానికి అవకాశం కల్పిస్తుంది. ఇది ప్రభుత్వం నిర్వహిస్తున్న లాభదాయకమైన ప్రచారం. భారతదేశంలో ఉత్పత్తులను తయారు చేయడానికి మల్టినేషనల్ కంపెనీలతో పాటు జాతీయ మరియు అంతర్జాతీయ స్థాయిలో దేశీయ కంపెనీలను ప్రోత్సహించడానికి ఇది తోడు పాడుతుంది. 2014